लोक दर्पण

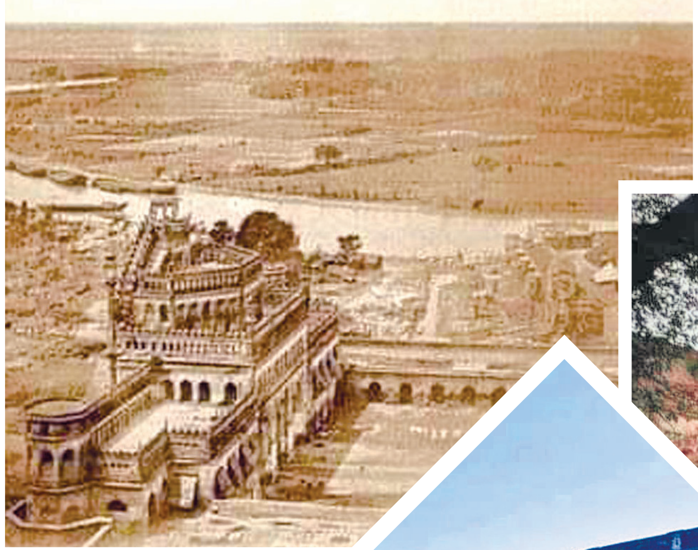

आओ सहेजें अपनी विरासत को

पौराणिक धरोहरों का केंद्र कानपुर

कानपुर वैदिक एवं पौराणिक धार्मिक ऐतिहासिकता को समेटे आर्य सभ्यता का केंद्र है। भौगोलिक रूप से कानपुर जम्बूद्वीप के अंतर्गत भरत खंड के उत्तर भाग आर्यावर्त प्रदेश में गंगा यमुना के अंतर्वेद में स्थित है। ब्रह्मावर्त में ही ब्रह्मदेव ने यज्ञ किया, मनु शतरूपा द्वारा सृष्टि विस्तार, उत्तानपाद एवं ध्रुव का साम्राज्य, ऋषि वाल्मीकि का आश्रम, सीता प्रवास, लवकुश जन्म स्थल सहित जमदग्नि, परशुराम, शुक्राचार्य, नारद, अंगिरा, दुर्वासा और श्रृंगी ऋषि के आश्रम विद्यमान है। उत्पलारण्य से समलंकृत ब्रह्मावर्त क्षेत्र में ही आर्य श्रेष्ठ स्वयंभू ने समाधिस्थ होकर ब्रह्म का साक्षात्कार कर ब्रह्म यज्ञ किया और ब्रह्मा पद धारण किया था। उसकी स्मृति लिए ब्रह्मखूंटी विद्यमान है। ब्रह्मा के पुत्र प्रजापति हुए जिन्हें ऋषियों ने उन्हें मनु उपाधि से अलंकृत किया। इसी यज्ञ तीर्थ में मनु शतरूपा ने सृष्टि विस्तार किया। मनु पुत्र उत्तानपाद ने शासन किया। उत्तानपाद पुत्र ध्रुव से जनित ध्रुवटीला बिठूर में है। जब ध्रुव गृह त्याग कर वन को चले तो यहीं के मैथा ग्राम में ध्रुव को नारद मुनि मिले, जहां द्वादशाक्षर मंत्र देकर मधुवन में तप करने का निर्देश दिया। बाद में ध्रुव यहीं वहिस्मतीपुरी में दीर्घ अवधि तक शासन किया था। संस्कृत साहित्य के आदि कवि महर्षि वाल्मीकि की जन्मभूमि बैले रुद्रपुर मानी जाती है। तपश्चर्या के बाद महर्षि वाल्मीकि बिठूर में आश्रम बनाकर रहे। सीता को जब परिहर में लक्ष्मण त्याग कर गए तब सीता को वाल्मीकि आश्रम बिठूर में आश्रय मिला। यहीं लवकुश का जन्म हुआ। श्रीराम के अश्वमेध यज्ञ के अश्व को यहीं पर लवकुश ने रोका और श्रीराम की सेना और अनुजों से युद्ध भी किया। रमेल में लवकुश और श्रीराम का मिलन हुआ। पुण्यतोया गंगा के पार्श्व में स्थित जाजमऊ राजा नहुष के पुत्र ययाति की राजधानी के रूप में लब्ध प्रतिष्ठ है। ययाति का विवाह शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से हुआ जिनकी स्मृति लिए मूसानगर का देवयानी सरोवर आज भी मौजूद है। मूसानगर में ही दैत्यराज बलि ने यज्ञ किया। बलि पुत्र बाणसुर का स्थान बनीपारा है। गंगा के सुरम्य तट पर बिल्हौर के पास आंकिन ग्राम में सप्तर्षि प्रधान अंगिरा ऋषि का आश्रम है। उसके आगे गंगा के ही पार्श्व में सैबसू ग्राम मे श्रृंगी ऋषि का आश्रम है। कश्यप पुत्र विभांडक के पुत्र श्रृंगी कर्मनिष्ठ ब्रह्मचारी थे। राजा रोमपाद ने अकाल के समय पर ऋषियों की सलाह पर श्रृंगी को बुलाया जिससे जलवृष्टि हुई। राजा रोमपाद ने राजा दशरथ और कौशल्या की पालित पुत्री शांता के साथ श्रृंगी ऋषि का विवाह करा दिया। उन्हीं श्रृंगी ऋषि ने राजा दशरथ के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था जिससे श्रीराम का जन्म हुआ था। सेंगुर नदी के पार्श्व में निगोही ग्राम में उग्र तपस्वी और क्रोध मूर्ति दुर्वासा ऋषि का आश्रम है। इसी प्रकार परसौरा में परशुराम और चिंतानेवादा में जमदग्नि ऋषि का स्थान है। इसी प्रकार नार ग्राम में नारद मुनि का स्थान है। इसी श्रृंखला में महाभारत कालीन द्रोण पुत्र अश्वत्थामा द्वारा खेरेश्वर महादेव का अभिषेक दानवीर कर्ण से जनित कानपुर भीष्म पितामह की सरसैया की स्मृति लिए सरसैयाघाट, मातृ पितृ भक्त श्रवण कुमार की स्मृति लिए सरवनखेड़ा आदि प्रमुख पौराणिक तीर्थ स्थल हैं।

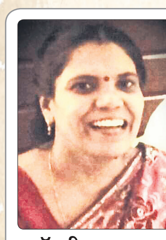

डॉ. नीलम शुक्ला
एसोसिएट प्रोफेसर, डी.बी.एस. कॉलेज, कानपुर

डॉ. नीलिमा पांडेय
प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय

विश्व विरासत दिवस प्रतिवर्ष 18 अप्रैल को मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य यह है कि पूरे विश्व में मानव सभ्यता से जुड़े ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थलों के संरक्षण के प्रति जागरूकता लाई जा सके। संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूनेस्को की पहल पर एक अंतर्राष्ट्रीय संधि की गई, जो विश्व के सांस्कृतिक प्राकृतिक धरोहर के संरक्षण के हेतु प्रतिबद्ध है। यह संधि सन् 1972 में लागू की गई।

दास्तान-ए-लखनऊ- अव्वल तो पूरा लखनऊ ही जर्रा-जर्रा इतिहास में डूबा हुआ है, मगर जिस हिस्से पर तारीखी इनायत अधिक रही वह चौक के नाम से जाना जाता है। ज्यादातर तो ये हिस्सा भीड़-भाड़, गम-ए-रोजगार से अटा पड़ा मिलता है, पर सुकून के दो पल भी हाथ आ जाएं और दर-ओ-दीवार पर फुर्सत से नजर डालने का मौका हासिल हो जाए तो पल भर को वक्त ठहर जाता है। यहां से गुजरते हुए ज्यादा न सही दो-चार बार तो खास लखनऊआ बोली की कानों में मिश्री घुल ही जाती है। चौक से गुजरते हुए गुजरे वक्त का इल्म इतिहास के मुरीदों को गम और खुशी में एक साथ सराबोर करता है। अकबरी गेट को निहारते हुए, जहां एक तरफ शहर की तारीखी पहचान खुशकर जाती है, वहीं दूसरी तरफ गेट की दुर्दशा सोचने पर मजबूर करती है कि ये हिंदुस्तान के अजीम-ओ-शाह शहंशाह की शान में बना था। चौक का दूसरा दरवाजा गोल दरवाजा कहलाता है। आज की तारीख में गोल दरवाजा आसफुद्दौला के नाज-ओ-अदब और नजाकत के पासंग कहीं नहीं ठहरता। दरवाजे की ऊपर को जाती हुई सीढ़ियों को देखते हुए पतंगबाजी करने जाते हुए नवाब की तस्वीर एकबारगी जिंदा हो उठती है। लखनऊ का अदब से तआरुफ सही मायनों में इसी नवाब ने करवाया। कमाल के इंसान थे नवाब आसफुद्दौला।

उनकी दरियादिली के तमाम किस्से अवध में यत्र-तत्र बिखरे हुए हैं। वजीर बेगम ने इस दरवाजे का वास्तु तैयार किया था। 1857-58 के बाद अंग्रेजी प्रशासन ने इसमें रद्दोबदल की और दरवाजे को अलंकृत करते हाथियों के शिल्प को हटवाकर उनकी जगह गुंबद लगवा दिए। लखनऊ की उपलब्ध तस्वीरें 1857 के बाद की हैं, जो इमारतें 1857-58 के विद्रोह में नष्ट हो गईं या टूट-फूट गईं, उनके मूल प्रारूप को जानने का कोई जरिया हमारे पास नहीं है। गोल दरवाजे की गुंबद वाली तस्वीर ही मिलती है। हाथी के शिल्प के साथ दरवाजा कैसा दिखता था, उसका सिर्फ कयास ही लगाया जा सकता है।

चौक का जो तीसरा स्मारक ध्यान खींचता है, वह चौक की पुलिस चौकी है। उसका वास्तु ठिठकने पर मजबूर कर देता है। पहली नजर में ही आप महसूस करते हैं कि कुछ तो है, जो इसे दूसरी चौकियों से अलग करता है। दरअसल एक जमाने में यह इमारत एक छोटे-मोटे नवाब का आशियाना हुआ करती थी। नाम था फुल्की कदर। असल नाम मियां अली कदर था। आवाम में नवाब साहब 'फुल्की' नाम से मशहूर थे। मशहूरियत के इस नाम की वजह उनका दिमागी खलल था। उन्हें लगता था कि आते-जाते कोई राहगीर अगर उनके जिस्म से छू गया तो अनर्थ हो जाएगा। या तो वो रेजा-रेजा पिघल जाएंगे या फिर चोट खा जाएंगे। इस खलल की वजह से उन्होंने बचते-बचाते चलने की एक अदा पाल ली। कुछ-कुछ 'हैंडिल विथ केयर' वाली नाजुकी अपनाने की वजह से सिमटे-सिकुड़े से चलते। बस इसी वजह से रियाया ने उन्हें हंसी-ठठ्ठे में 'फुल्की नवाब' कहना शुरू कर दिया।

फुल्की नवाब को उनकी दादी जान वसीयत में ढेर सारी संपत्ति की मिल्कियत सौंप गई थीं। जाहिरा तौर पर वे 1857 से पहले ऐश-ओ-इशरत और नफासत की जिंदगी गुजार रहे थे। गोल दरवाजे के पास ही उनकी खूबसूरत सी हवेली थी। पास में मच्छी वाली बारादरी थी। 1857-58 के विद्रोह में लखनऊ की पुरजोर भागीदारी ने अंग्रेजों को बौखलाहट की हद तक पहुंचाया। इस बौखलाहट का खामियाजा शहर के नवाबों और आवाम के साथ-साथ शहर की इमारतों ने भी चुकाया। भारी तहस-नहस हुई। तमाम इमारतें धूल-धूसरित कर दी गईं। अंग्रेजों के कोप का भाजन फुल्की नवाब भी हुए। उनकी हवेली पर अंग्रेजी कब्जा हो गया। बारादरी जमींदोज कर दी गई। वक्त की मार से बेघर-बेआबरु होने के दर्द को फुल्की नवाब ने कुछ इस तरह जाहिर किया।

चल दिया फुल्की कदर उनका जमाना हो गया,
खुद गई बारादरी ड्योढ़ी पे थाना हो गया।

बाकी उम्र अली कदर ने मुफलिसी में आम आदमी की तरह गुजारी। गोमती किनारे 'नानी का इमामबाड़ा' पहुंचकर ही उनके हिस्से चैन की सांस आई। बारादरी वाली जगह पर बाद में भोलानाथ धर्मशाला बन गई। उनके आशियाने को थाने में बदल दिया गया। आज भी उसमें वर्दी की ही शिरकत है। अपने वास्तु की वजह से यह लखनऊ के पुलिस थानों में अलहदा है।

बेली गारद

रेजीडेंसी में कदम रखते एक गेटनुमा संरचना हमारा स्वागत करती है। इसे बेली गेट के नाम से जाना जाता है। सन् 1807 में जब अवध के रेजिडेंट कर्नल जान बेली लखनऊ तशरीफ लाए तो उनके खैर मकदम के लिए नवाब सआदत अली खान ने इसे बनवाया था। उनके नाम पर ही यह बेली गेट कहलाया। रेजिडेंट रुतबे और रुआब वाला व्यक्ति होता था। जब भी बेली साहब इस गेट से आते-जाते उन्हें सलामी ठोंकी जाती। सलामी देने के लिए इस गेट पर नियुक्त किए गए गार्डों की टुकड़ी 'बेली गार्ड' कहलाती थी। चूंकि यह गेट रेजीडेंसी के मुख्य प्रवेश द्वार की तरह इस्तेमाल होता था। धीरे-धीरे रेजीडेंसी को इन गार्डों की टुकड़ी के नाम से पुकारा जाने लगा। इस तरह रेजीडेंसी 'बेली गार्ड' कहलाने लगी। इतिहास के सफर में अवाम की बोलचाल के असर से यह कब 'बेली गारद' हो गया कहना मुश्किल है। ढेर सारे दस्तावेजों में लखनऊ रेजीडेंसी 'बेली गारद' के नाम से दर्ज है। पुरानी लखनवी अवाम आज भी इसे बेली गारद ही कहती है। सन् 1857 ईसवी में जब पूरा लखनऊ तहस-नहस हो रहा था बेली गेट भी चपेट में आया। काफी तोड़-फोड़ और आगजनी हुई। बहरहाल आज यह संरक्षित-सुरक्षित है जिसका श्रेय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग को है। अब सिर्फ गेट ही देखा जा सकता है। गेट के इर्दगिर्द जो गार्ड-क्वाटर्स थे वह नष्ट हो चुके हैं।

कोषागार

आमतौर पर माना जाता है कि कोषागार नाम से जो संरचना रेजीडेंसी में स्थित है वह काफी बाद में सन् 1851 ईसवीं में किसी समय बनवाई गई। इसके निर्माण से पहले ट्रेजरी के रख-रखाव के लिए अस्थायी संरचना इस्तेमाल की जाती थी जिसकी दीवारें कच्ची और छाजन छप्पर का था। 1851 से पहले किसी समय उसमें आग लग जाने से एक नया कोषागार बनवाने का निर्णय लिया गया। इस समय जो ढांचा बचा हुआ है, उसमें गोल खंभे और दीवारें शेष हैं। कुछ खिड़कीनुमा संरचनाएं भी हैं। छत गायब है। अनुमान है कि गोल खंभों पर टिका हुआ एक पोर्टिको था। खिड़की नुमा संरचनाएं, जो क्रम से तीन हैं, उनका इस्तेमाल भुगतान और वेतन बांटने के लिए किया जाता होगा। कुछ समय के लिए कोषागार के हालनुमा कक्ष का इस्तेमाल कारतूस बनाने की कार्यशाला की तरह भी किया गया।

फेयरर हाउस

रेजीडेंसी में बेली गेट से भीतर आने के बाद कुछ कदम चलकर सड़क के बाएं जो संरचना मिलती है, उसे फेयरर हाउस कहते हैं। फेयरर पेशे से चिकित्सक थे। सन् 1857 ईसवी के संग्राम के समय वह इसी घर में अपने परिवार के साथ रह रहे थे। उनके ही नाम पर इसे फेयरर हाउस कहा गया। 1857 में रेजीडेंसी में घेराबंदी के समय जुलाई की 2 तारीख को अवध के तत्कालीन कमिश्नर घायल हो गए। उनके इलाज का जिम्मा डॉक्टर फेयरर पर आया। इलाज के दौरान ही 4 जुलाई को फेयरर हाउस के एक कमरे में उनकी मृत्यु हो गई। उस कमरे में इस बात की सूचना देता हुआ एक पत्थर दीवार पर जड़ा है। इस घर में एक तहखाना भी था। सन् 1857 में इस तहखाने का इस्तेमाल अंग्रेज औरतों और बच्चों को सुरक्षित रखने के लिए किया गया। फेयरर हाउस के सामने के दालान में एक कुआं भी है जिसे अब ढक दिया गया है।

बेगम कोठी और मस्जिद

ऐसे पर्यटक जो इतिहास के कम जानकार हैं, उन्हें लखनऊ रेजीडेंसी में हैरतजदा करने वाली इमारतें बेगमकोठी, उससे लगी हुई मस्जिद और इमामबाड़ा हैं। चूंकि रेजीडेंसी का इस्तेमाल अंग्रेज रेजिडेंट करते रहे और एक बार अंग्रेजों के सुपुर्द होने के बाद वह कभी नवाबों के हाथ वापस न आई। इसलिए रेजीडेंसी के भीतर मस्जिद और इमामबाड़ा होना कल्पनातीत है।

बेगम कोठी की वास्तविक मिल्कियत नवाब आसफुदौला की थी जिसे सकविले मारकस टेलर ने उनसे खरीदा था। वह सहायक रेजिडेंट थे। उनके 1786-1802 के बीच लखनऊ रहने की सूचना मिलती है। क्रमशः कई हाथों में बिकते हुए यह कोठी वाल्टर्स परिवार के पास पहुंची। जार्ज हॉपकिंस वाल्टर्स अंग्रेजी सेना में अधिकारी थे। उनकी छोटी बेटी एम्मा वाल्टर्स का ब्याह अवध के दूसरे बादशाह नसीरुद्दीन हैदर के साथ हुआ। इस ब्याह से वाल्टर्स परिवार के रुआब और रुतबे में खासी बढ़ोतरी हुई।

ब्याह के बाद बेगम मुकद्दरा-ए-आलिया कहलाईं। सन् 1837 ईसवी में बादशाह नसीरुद्दीन हैदर के गुजर जाने के बाद बेगम वापस अपने वालिद के घर रहने लगी। उनकी वापसी से रेजीडेंसी के भीतर उनका आवास 'बेगम कोठी' कहलाने लगा। इस बीच उनके पिता जार्ज हापकिंस की मृत्यु के बाद बेगम की मां ने कई शादियां की। उनका अंतिम विवाह बख्श अली के साथ हुआ। इस विवाह के साथ ही पूरे परिवार ने इस्लाम धर्म अपना लिया। ऐसा बादशाह से करीबी दिखाने के लिए भी किया गया। धर्म परिवर्तन के बाद बेगम की बहन शरफ-उन-निसा कहलाईं। उनके पति अमीर मिर्जा के नाम से जाने गए। जब बेगम की मौत हुई बेऔलाद होने की वजह से उनकी सारी दौलत और सम्पत्ति पर उनकी बहन का हक हुआ। तकदीर की इस इनायत का शुक्रिया अदा करने के लिए शरफ उन-निसा ने बेगम कोठी से लगी हुई एक मस्जिद और उसके बगल में एक इमामबाड़ा बनवाया।

मौजूदा रेजीडेंसी परिसर में जब हम फेयरर हाउस से कुछ आगे बढ़ते हैं तो बेगम कोठी लिखा पत्थर का नामपट्ट एक दीवार से जड़ा दिखता है। कोठी का ज्यादातर हिस्सा ढह गया है। छत गायब है। सिर्फ कुछ दीवारें बची हैं। इमामबाड़ा भी खस्ताहाल है। उसकी भी छत नदारद है। मस्जिद जरूर बची हुई है, लेकिन उसे भी मरम्मत की दरकार है। देखने में वह बेहद खूबसूरत है। वहां आज भी जुमे की नमाज अदा होती है।

संरक्षण की राह देखतीं इमारतें

जनपद शाहजहांपुर ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही समृद्ध है। जिले में पुरातात्विक महत्व की अनेक इमारतें हैं जिनके संरक्षण की दिशा में कोई प्रयास अभी तक नही हुए हैं। इनमें से सबसे ज्यादा संवेदनशील इमारत नवाब बहादुर खां का मकबरा है। नवाब बहादुर खां शहर के संस्थापक थे। वे तथा उनके भाई दिलेर खां शाहजहां के समय मुगलिया मनसबदारी व्यवस्था में शामिल थे। शिशमाहा तरीके पर उनकी जागीर नियुक्ति से बहुत दूर आवंटित की गई थी। परंपरा के अनुरूप शाहजहांपुर में एक किला तथा मस्जिद की तामीर से शहर की अवस्थापाना का कार्य प्रारंभ हुआ। ख्वाजा बुलंद शहर के मुख्य वास्तुकार थे।

डॉ. विकास खुराना
शाहजहांपुर

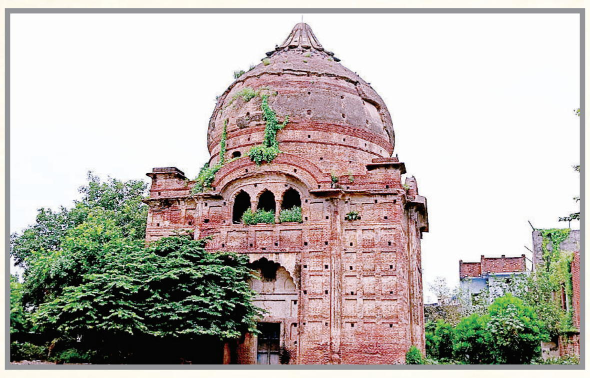

बहादुर खां की कलांतर में मौत कंधार में हो गई और उनकी इच्छा के अनुरूप उन्हें यहां लाकर दफनकर दिया गया। ब्रिटिश गजेटियर लेखन काल तक उनका मकबरा शाहजहांपुर शहर की सबसे ऊंची इमारत था। नवाब बहादुर खां की मृत्यु का वर्ष 1649 है। जबकि मकबरे का निर्माण वर्ष 1713-14 है। नवाब अजीज खां को इस मकबरे के निर्माण का श्रेय दिया जाता है। यह मकबरा संगमरमर का बना था तथा यह क्षेत्रीय मुगल वास्तुशैली का नायाब उदाहरण है, ऊंचे सुनहरी गुंबद सूरज की तीव्र रोशनी में चमक उठते थे। वर्ष 1857 की क्रांति के बाद अंग्रेजों ने इसे जलालाबाद के ठाकुर ज्ञान सिंह को दे दिया। जब उनकी माली हालत खराब हुई तो जलालाबाद के समृद्ध पठान परिवारों ने उनसे इसे खरीद कर कटरा के निजामुद्दीन की देख-रेख में कर दिया। वर्तमान में इसकी दशा दयनीय है। गौरतलब है कि हरदोई के शाहबाद कस्बे में नवाब के बड़े भाई दिलेर खां का मकबरा पुरातात्विक विभाग द्वारा संरक्षित है, नवाब बहादुर खां के मकबरे की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता।

इसके अतिरिक्त शहर में मकबरों में एक अन्य विशिष्ट मकबरा नवाब अहमद अली खां का है। यह मोहल्ला गोहरपुरा में ए.बी. रिच इंटर कालेज के एक ओर मुख्य सड़क स्थित इस मकबरे का निर्माण मन्सब बेगम द्वारा अपने पति नवाब अहमद अली खां की मृत्यु के बाद करवाया गया। इस मकबरे के बारे में शहर में लिखी गई पुस्तक 'गैर मुस्लिम शायरा-ए-शाहजहांपुर' (पृ० सं०38) जिसका उद्धरण डॉ. एन.सी. मेहरोत्रा ने अपनी पुस्तक 'शाहजहांपुर की सांस्कृतिक धरोहर' में भी दिया है से मिलती है। उसके अनुरूप 1857 की क्रांति विफलता के बाद जो क्रांतिकारी पकड़े गए, उन्हें निकट वाकरजई मोहल्ले में लाला रोशनलाल के महल व दीवान खाने में रखा गया। उस स्थान पर एक नीम का पेड़ था, जहां से सैकड़ों लोगों को फांसी दी गई। 16 जून 1858 ई. को मौलवी का कटा हुआ सिर इसी स्थान पर लाया गया था। यही से उसे कोतवाली में बांस पर टांगने का आदेश हुआ था। सन् 1858 ई. में शाहबाद में मन्सब बेगम की भी मृत्यु हो गई। परिवार वालों ने उनको भी इस मकबरे में दफन करना चाहा, लेकिन जिला मजिस्ट्रेट ने अनुमति नहीं दी। परिणाम स्वरूप हकीम अब्दुल कादर खां के मकान के पूर्व में एक पक्के चबूतरे पर उन्हें दफन किया गया। सन् 1857 के विद्रोह के बाद अंग्रेजों ने इस पर कब्जा कर लिया। जिला मजिस्ट्रेट जीपी मनी ने इस मकबरे को अपना निवास स्थान बनाया था। कचहरी भी यहीं लगती थीं। इस मकबरे की दशा भी खराब है और इसकी और किसी का ध्यान नहीं है।

भगवान परशुराम की जन्मस्थली

यद्यपि देश में अनेक स्थानों पर भगवान परशुराम जन्मस्थली के दावे किए जाते हैं, किंतु प्राप्त स्रोत उनका जन्म अपने जिले शाहजहांपुर में स्पष्ट रूप से बताते हैं। डॉ ब्रह्मानंद शुक्ला की पुस्तक भगवान परशुराम महागाथा शोध ग्रंथ में ऐसी दस अनुसूचियां रेखांकित हैं जिससे पता चलता है कि भगवान परशुराम जी का जन्म अपने शाहजहांपुर के जलालाबाद क्षेत्र में ही हुआ था। यहां बीस फीट ऊंचे टीले पर भगवान परशुराम जी का मंदिर है जिसके मुख्य द्वार पर फरसा लगा हुआ है। यह फरसा तत्कालीन तहसीलदार प्रभु दयाल को वर्ष 1903 में खुदाई करते समय मिट्टी में दबा मिला था। इसके अतिरिक्त खरोष्ठी भाषा में लिखे दो लेख भी यहां मिले हैं।

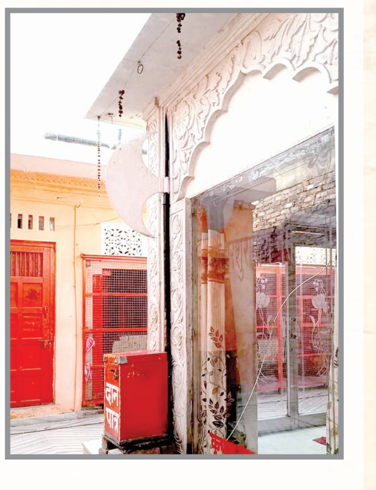

सराय हकीम मेहदी

पुराने राष्ट्रीय राजमार्ग पर खन्नौत पुल से थोड़ा आगे एक सराय है। इसे अवध दरबार के वजीर हकीम मेहदी ने सन् 1825 में बनवाया था। विशप हर्पर जो 1820 के दशक में शाहजहांपुर आए थे तथा शहर के बारे में उन्होंने तफसीर से लिखा हकीम मेहंदी को मैन ऑफ टैलेंट कहकर पुकारते हैं। जबकि अन्य ब्रिटिश स्रोत उन्हें अवध का तूफानी विद्रोही कहकर उच्चारित करते हैं। उनके पिता सईद नवाब असफुद्दौला के दरबार में थे। जब सआदत खान अवध का नया नवाब बना तो हकीम मेहंदी उसके वजीर नियुक्त हुए। बरेली तक का क्षेत्र उनके अधिकार में था। वर्ष 1830 में उन्हें अंग्रेज विरोधी करार देते हुए पदच्युत कर दिया गया। वे 1837 में दिवंगत हुए थे। उन्होंने ही गर्रा तथा खन्नौत पर बीम के पुल डलवाए थे। इस सराय में हिंदू तथा मुसलमानों के रुकने की पृथक व्यवस्थाएं की थीं। जल के लिए कुएं तथा विशाल सहन वाले कमरे बने हुए थे। इसकी खास बात यह थी कि इसमें रुकने वालों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता था, बल्कि सराय के आमने-सामने कुछ बीघा जमीन सराय के नाम कर दी गई थी जिसकी आय से कर्मचारियों का वेतन तथा सराय का खर्च निकलता था। 1863 में सराय का प्रभार नगर पालिका ने मात्र 4 रुपए के अनुदान पर ले लिया। शर्त यह थी कि पालिका यात्रियों से कोई किराया वसूल नहीं करेगी। हकीम मेहंदी 1832 में दोबारा अवध के वजीर बन गए थे। 25 दिसंबर 1837 को उनकी मृत्यु हो गई। उनका मकबरा लखनऊ में बना है। शहर में सराय के अलावा कई अन्य सराय हैं। मुन्नूगंज, खिरनीबाग, बाड़ूजई, वजीरगंज की सराय आज भी अस्तित्व में है जिनका परिचालन सराय के अधिनियम 1867 से होता है।

जमदग्नि आश्रम

शाहजहांपुर की जलालाबाद तहसील में भगवान परशुराम मंदिर से दो किलोमीटर दूर महर्षि जमदग्नि का आश्रम है। महर्षि जमदग्नि भगवान परशुराम के पिता थे। कोंकण प्रदेश के राजा ने अपनी पुत्री रेणुका का विवाह महर्षि जमदग्नि से किया था। उनकी पांचवी संतान भगवान परशुराम थे। जमदग्नि आश्रम के समीप ही रेणुका कुटिया है। आज वहां ढकियाईन देवी का प्रसिद्ध मंदिर स्थापित है। इसका शाब्दिक अर्थ है वह देवी जिसका जन्म दक्षिण में हुआ। पास ही एक बड़ी झील है जिसे जमदग्नि आश्रम झील कहा जाता है। इस आश्रम में प्रतिवर्ष तीन दिवसीय मेला लगता है, जहां भारी भीड़ उमड़ती है।

पटना देवकली

जनपद शाहजहांपुर के कलान में स्थित श्री पटना देवकली मंदिर अपने आप में विस्तृत इतिहास समेटे है। यह स्थल दैत्य गुरु शुक्राचार्य की तपोस्थली रहा है। उन्होंने यहां शिवलिंग की स्थापना की थी। यह एक बड़ा सरोवर है जिसे शुक्र काशी के नाम से जाना जाता है। मंदिर की खुदाई में महाभारत कालीन सिक्के एवं पात्र मिले हैं। इससे थोड़ी ही दूर एक गांव में लक्षाग्रह होने के प्रमाण भी हैं। स्पष्ट है कि अज्ञातवास के दिनों में पांडव इस क्षेत्र में रुके थे। जनश्रुति है कि वे यहां भगवान की पूजा अर्चना करते थे।

व्यंग्य

आपदा में अवसर

रेखा शाह
बलिया

इस दुनिया में हर अवसर किसी के लिए आपदा होती है तो हर आपदा किसी के लिए एक बेहतरीन अवसर होता है। अब यह आपकी नजर के ऊपर है कि आपने उसे अवसर के रूप में देखा या आपदा के रूप में देखा। आप सबने भी करोना में देखा होगा। कुछ लोग ऊपर जाने से बचने के प्रयास में अपना सबकुछ लुटा दिए। कुछ उन्हें बचाने के प्रयास में उन्हें लूटकर बहुत ऊपर पहुंच गए। अर्थात् आप अर्थ का अनर्थ मत समझिए। कुछ लोग जान बचाने के लिए महंगी दवाई, महंगे-महंगे खाद्यान्न,राशन पानी खरीद कर खा रहे थे। कुछ उन्हें महंगे दामों पर बेचकर मालामाल भी हो रहे थे। इसे कहते हैं आपदा में अवसर पा जाना और अपने देश में ऐसे अवसर पारखियों की कोई कमी नहीं है। आप आपदा में पड़कर तो देखिए। वह लोग अवसर तुरंत तलाश लेंगे। अपने देश में तो लाश में भी अवसर तलाश कर लिया जाता है। पारखी आपको ऐसे तलाश कर लेंगे जैसे मक्खियां सड़ी हुई गंदगी को तलाश कर लेती हैं।

फिर से अपने देश में चुनाव आया है। आप इसे कुछ लोगों के लिए अवसर मान सकते हैं,पर चतुर जी के नजरिए से इसमें आपदा भी है और इसमें बहुत बड़े-बड़े अवसर भी छुपे हैं। अब यह आपकी बुद्धि के ऊपर है कि आप इसे अवसर के रूप में बनाते हैं या आपदा के रूप में सर को कूटवाते हैं। अब चुनाव लड़ने के लिए तो बहुत लोग खड़े होंगे,लेकिन उनमें से सभी थोड़े न जीत जाएंगे। एक जीतेगा बाकी हार जाएंगे और जो जीतेगा उसके लिए अवसर होगा, जो हार जाएगा उसके लिए तो यह आपदा से कुछ कम नहीं होगा। हार जाएगा उसके दिल पर तो फफोले पड़ेंगे ही और उनको उस फफोले के लिए मरहम भी चाहिए। कुछ लोग तो जुगाड़ पानी लगाकर अपने फफोले पड़ने नहीं देंगे,लेकिन बाकियों के ऊपर पड़ी विपत्ति का क्या उन्हें तो दवा चाहिए। उनके लिए चतुर जी ने एक मरहम बनाया है जिससे उनके छालों को आराम मिले। यकीन मानिए दो-तीन महीने इस बिजनेस के चलने के खूब आसार हैं। बिजनेस डूबने की तो कोई संभावना ही नहीं है और चतुर जी अपने प्रोडक्ट के प्रचार में जोर-शोर से लगे हुए हैं। मार्केटिंग इतनी जबरदस्त की है कि उनके प्रोडक्ट की शॉर्टेज होने की संभावना बहुत ज्यादा है। इसीलिए पहले से ही चार गुना दाम रख लिए हैं।

आजकल बिजनेस का यही फंडा भी है कि प्रोडक्ट चाहे जैसा हो,लेकिन मार्केटिंग अगर सही ढंग से की जाए तो घटिया से घटिया प्रोडक्ट भी मार्केट में जबरदस्त परफॉर्मेंस दिखाता है। बिजनेस करके देता है। आपने बॉलीवुड वालों को देखा ही होगा अपनी घटिया से घटिया फिल्म से भी अपने मार्केटिंग के बदौलत अच्छे खासे पैसे कमा लेते हैं। उससे भी बड़ा ट्रेंड यह है कि जो विवादित विषय होता है उसमें ही अवसर तलाश करते हैं। यानी कि हर कोई आपदा में अवसर तलाश करता है। हर कोई इस दुनिया में समझदार है। बस किसी का चल जाता है और किसी का नहीं चल पाता है।

आप भी अपने शहर जहां पर भी निवास करते हैं। वहां के आपदा पर नजर डालिए और उसी में अवसर तलाश कर लीजिए। दूर जाने की भी कोई ज्यादा जरूरत नहीं है। सबसे अच्छा बिजनेस वहीं से मिलेगा। यह सरकारी नौकरी और बड़े-बड़े शहरों में जाकर बिजनेस तलाशना बंद कीजिए। यह बड़े-बड़े शहर यह बड़े-बड़े बिल्डिंग यह बड़े-बड़े लोग सिर्फ मोह माया है।

असली माया तो आपके आसपास ही है। बस आप अवसर पहचानना सीख लीजिए और आपदा में अवसर पहचाना सीखिए। आप भी किसी के लिए आपदा हैं तो किसी के लिए अवसर हैं। कोई आपका इस्तेमाल करें उससे पहले आप इस दुनिया का इस्तेमाल कर लीजिए। इस तरह हर लगे न फिटकरी रंग भी चोखा आएगा जिनको लगता है कि उनका इस्तेमाल नहीं किया जाएगा तो वह सबसे बड़ा धोखा खाएगा।

कविता

जीवन क्रंदन

सुन अपने निज कोलाहल को,
मुझ में बहरापन आ जाता।
आंधी सा जो आगे बढ़ता,
आत्मोदीपक बुझ सा जाता।

आगे अपने किसी की न सुनता,
गर्व से नित एकांकी बनता।
पीछे राहों में कांटे बोकर,
कैसे चैन की नींद ले पता।

फिर बचने की कोशिश करता ,
फिर क्यों कर मैं संभल पाता।
स्वयं अपने निर्मल पथ पर मैंने,
ला-ला कर कर्दम जो डाला।

जीवन के इन बेसुरे सुरों को,
काश! मैं लय में ला पाता।
टूटे हुए सुजन रिश्तों को,
काश! मैं पिरोकर रख पाता।

अपने व्याकुल अंतर मन की,
उर-पीड़ा को समझा पाता।
जीवन के इस क्रंदन को हाय!
प्रिय प्यारी को समझा पता।

दीन-दुखी को ठोकर देकर,
कैसे मैं निष्कंटक पथ को पाता।

गीत खुशी के लाखों गाये पर,
मन के दुख किस तरह छुपाता।

पश्चाताप भरे गीतों से भी मैं,
न उर की पीड़ा को हर पाता।
जगती के कोलाहल में भी,
मैं अपने को एकाकी पाता।

जीवन के इस कठिन क्रंदन को,
काश! मैं विस्मित कर पाता।
जीवन के बेसुरे स्वरों को,
काश! लय में ला पाता
'कौस्तुभ'।
काश! लय में ला पाता
'कौस्तुभ'।

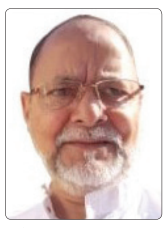
कौस्तुभ आनंद चंदोला
स्वतंत्र पत्रकार, लखनऊ

ज्योतित मां

मंजरियों में मृदु मुस्काती, चैत
चांदनी है ज्योतित मां!

नौ रातों की पूजा लेकर,कोई
भाव न दूजा लेकर
गुनगुनी धूप की वासंती, चादर
ओढ़े शोभित मां!

बहुरंग सवारी ले उतरी, जग
की फुलवारी में उतरी
नव पल्लव के हरित रुधिर से,
अधरों तक सदा सुवासित मां!

गहरे सागर पर्वत ऊपर, बीहड़
जंगल विस्तृत भू पर
अतल वितल पाताल लोक के,
आलोक रूप पर मोहित मां!

डॉ. संजय पंकज
वरिष्ठ लेखक

तो हुए तरल

फिर आंखों में सपने सारे
हुए सजल।
पल भर में ही रिश्ते सारे
गए बदल।

नजरें नजरों से कतराकर
दूर हुईं।
शंकाएं चेहरों पर घिर मगरूर
हुईं।
अवसादों में डूबे मन
तो हुए तरल।

बातों बातों में मन का सच
निकल गया।
बहुत तेज चढ़ने में ही
था फिसल गया।
संवादों से गई मनों की
बर्फ पिघल।

जीवन जीना भी अजीब सा
लगता है।
हर कोई अब मानों खुद को
छलता है।
सोच रहा था कैसा होगा
जाने कल।

पंकज मिश्र 'अटल'
शाहजहांपुर

अंबा तेरा नाम

अंबा तेरा नाम, वैष्णो तेरा नाम
नंदा तेरा नाम, गिरिजा तेरा नाम।
तेरे नाम हैं अनेक पर तू तो एक है,
मां तू एक है।
अंबा तेरा नाम...

तेरे दर पर मैया भक्त, मुरादें लेकर आते हैं ।
दर्शन से तेरे वो धन्य हो जाते हैं।
तू अपनी कृपा मैया उन पर बरसाती है
जो लेते हैं मैया तेरा नाम सुबह शाम।
अंबा तेरा नाम...

बल, बुद्धि देती मां, कुमति हर लेती मां।
सत्कर्मों की पूंजी से जीवन भर देती मां ।
अपने भक्तों की पीड़ा दूर करती मां।
पूर्ण करती है मां उनके सारे काम।
अंबा तेरा नाम...

तू ज्ञानी है माता, अंतर्यामी है माता।
तेरे सुमिरन से भाग्य बदल जाता।
तेरी दृष्टि में मैया हर भक्त बराबर है।
भक्तों का तेरे होता है ऊंचा नाम।
अंबा तेरा नाम ...

जब-जब भी देवों का आसन डोला है,
रणचंडी का मां तूने पहना चोला है।
असुरों के बल को तूने चूर किया है
करके मां दैत्यों से डटकर संग्राम।
अंबा तेरा नाम...

कमला बिष्ट "कमल"
अल्मोड़ा

कहानी

आधुनिक लोग

डॉ. मृदुल शर्मा
लखनऊ

पिपरगांव के ग्राम प्रधान चौधरी शिव बरन सिंह और उनकी पत्नी श्रीमती रमा सिंह को जब इस बात की जानकारी हुई कि उनकी पुत्रवधू गर्भवती है तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। चौधरी शिव बरन सिंह और उनकी पत्नी अपने पैतृक मकान की साफ-सफाई कराने में जुट गए। वह रात को लेटते तो मन ही मन बच्चे का जन्म होने पर भोज देने की योजना बनाते। कौन-कौन से गांव के किस-किस को निमंत्रण देना है,कुल कितने लोग हो जाएंगे,खाने का मीनू क्या होगा आदि विषयों पर वह विचार करते। उनकी इस भोज व्यवस्था में व्यस्तता देख कर निंद्रा देवी उड़न छू हो जातीं और चौधरी साहब रात-रात भर करवटें बदलते रह जाते। दीपावली के अवसर पर जब चौधरी साहब का इकलौता पुत्र अपने माता-पिता के पास त्योहार मनाने आया तो उसकी मां ने उसे डांटते हुए कहा-"बहू को लेकर क्यों नहीं आया?" "अम्मा उसने कुछ दिन अपनी मां के साथ रहने की इच्छा व्यक्त की थी तो मैं उसे उसके मायके छोड़ता हुआ यहां चला आया।" त्रिभुवन ने सफाई पेश की।

"ठीक है। जल्दी ही बहू को यहां पहुंचा जाना। ऐन टेम पर गर्भवती महिला को यात्रा नहीं करनी चाहिए।"- मां ने बेटे को समझाया और फिर बच्चे के जन्म से संबंधित सारी तैयारी और योजनाओं की जानकारी त्रिभुवन को दी। त्रिभुवन यों तो किसी मल्टीनेशनल कंपनी में बहुत बड़ा अधिकारी था,मगर अपनी मां रमा सिंह के सामने वह उनका भोलाभाला 'लला' ही था। सो वह बेचारा शर्म से सिर झुकाए अपनी मां की बातें सुनता रहा। त्रिभुवन जब पिपरगांव से वापस बैंगलौर लौटा तो बड़ी दुविधा में था। वह जानता था कि उसकी पत्नी सांभवी बच्चे के जन्म के समय पिपरगांव में रहने हेतु किसी भी दशा में राजी नहीं होगी और पिपरगांव में स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं के घोर अभाव को देखते हुए यह उचित भी है। मगर अम्मा बाबू की बच्चे के जन्म को लेकर की जा रही तैयारियां और योजनाओं को देखते हुए वह यह भी सोच रहा था कि जब सांभवी को पिपरगांव भेजने से मना करेंगे तो उन्हें बहुत दुख होगा।

एक सप्ताह बाद जब सांभवी अपने भाई के साथ मायके से बैंगलोर वापस लौटी तो एक दिन त्रिभुवन ने अपनी उलझन सांभवी को बताई। उसकी बात सुनकर सांभवी बोली- "पिपरगांव में डिलीवरी? पागल हो गए हो क्या?" डिलीवरी के समय तुम मुझे गाजियाबाद भेज देना। वहां पर मम्मी-पापा सुरक्षित डिलीवरी हेतु सारी व्यवस्था कर लेंगे।" निर्णायक स्वर में सांभवी द्वारा कही गई बात को सुनकर उस समय तो त्रिभुवन चुप हो गया। मगर धीरे-धीरे उसने सांभवी को इस बात के लिए राजी कर लिया कि डिलीवरी बैंगलोर में होगी और उन दिनों त्रिभुवन अपने माता-पिता को बैंगलोर बुला लेगा तथा सांभवी और नवजात शिशु की उचित देखभाल की व्यवस्था हेतु वह एक सप्ताह तक अवकाश पर रहेगा।

गर्भस्थ शिशु के जन्म के कुछ दिन पूर्व त्रिभुवन ने गांव जाकर अपने माता-पिता को बताया कि सांभवी के शरीर में रक्त की बहुत कमी हो गई है। डाक्टर ने उसे अस्पताल में भर्ती करने की सलाह दी है। यह सुनकर वे बहुत चिंतित हो गए। उन्होंने अपने पड़ोसी सुरेश को बुलाकर कहा- "सुरेश,हम लोग बैंगलोर जा रहे हैं। तुम घर का तथा हमारे जानवरों का ख्याल रखना। भैंस दूध दे रही है। उसके खाने के लिए दाना और चोकर भी भूसे वाली कोठरी में है। उसकी सेवा के साथ ही दूसरे जानवरों के खाने-पीने का भी पूरा ख्याल रखना। भैंस दोनों टाइम दो-दो लीटर दूध देती हैं। खूब छक कर तुम लोग दूध पीना और घर की अच्छे से रखवाली करना।"

सुरेश सिर झुका कर बोला-"आप निश्चिंत होकर जाओ चौधरी सा'। हम शिकायत का मौका नहीं देंगे।" चौधरी साहब और उनकी पत्नी त्रिभुवन के साथ बैंगलोर आ गए। बैंगलोर के पाश एरिया में कंचन जंघा हाइट्स में उसने टावर नंबर आठ में फ्लैट नंबर 1204 किराए पर ले रखा था। चौधरी शिव बरन सिंह और उनकी पत्नी श्रीमती रमा सिंह बेटे का घर देखकर खूब हंसे। श्रीमती रमा सिंह बोलीं-"भइया यह घर है या पिंजरा। न औरतों के लिए आंगन,न मर्दों के लिए चबूतरा,न पैर रखने के लिए धरती माता। अगर ढोर-डांगर रखने का शौक हो तो कहां रखे? पंछी के नाम पर

सिर्फ कबूतर ही दिखाई देते हैं।" वहां रहते हुए ग्रामीण दंपति ने देखा कि यहां तो कोई किसी से बोलता ही नहीं है। चौधरी साहब ने बातचीत शुरू करने के उद्देश्य से सामने पड़ने पर कई लोगों को 'राम राम' बोला,मगर कोई दूसरी ओर देखने लगा और किसी ने प्रत्युत्तर में धीरे से सिर हिला दिया।

सर्दियों के दिन थे। उन्होंने देखा कि कालोनी में रहने वाले पुरुष और स्त्रियां सुबह-शाम कालोनी के किनारे और पार्क के चारों ओर बनी सड़कों पर टहलते हैं। स्त्रियां भी पुरुषों के जैसे ही जीन्स और जैकेट पहने पहनती हैं। बहुत सवेरे ही अनेक लड़कियां और औरतें काम करने के लिए बाहर से कालोनी में आती हैं। वे सब दोपहर में बारह बजे से दो बजे के बीच कालोनी में स्थित पार्क में धूप में बैठकर भोजन करती हैं। दोपहर में त्रिभुवन के माता-पिता भी पार्क में जाकर टहलते थे। धीरे-धीरे इन लोगों की उन कामवाली स्त्रियों से बातचीत होने लगी। उन्होंने बताया कि यहां हर घर में झाड़-पोछा करने, बर्तन धोने, कपड़े धोने और खाना बनाने के लिए के लिए, छोटे बच्चों को संभालने के लिए बाहर से काम वाली आती हैं। "फिर यहां रहने वाली औरतें दिन भर क्या करती हैं?"- रमा सिंह ने आश्चर्य से पूछा। "वे सब कार से मार्केट जाती हैं, बच्चों को स्कूल से लातीं हैं, टी.वी. देखती हैं।"- एक महिला ने उत्तर दिया। फिर कुछ रुककर बोली- "जिस दिन खाना बनाने वाली नहीं आती है,उस दिन जोमाटो को खाना लाने का आर्डर दे दिया जाता है या रेस्टोरेंट में जाकर वे लोग खाना खा आते हैं।"

चौधरी साहब ने वार्ता में सम्मिलित होते हुए कहा- "यहां तो कोई किसी से बोलता ही नहीं। ये पड़ोसियों के सुख-दुख में भी क्या शामिल होते होंगे?" उनकी बात सुनकर एक बूढ़ी स्त्री बोली- "यहां तो लाश उठाने के लिए भी मजदूर बुलाए जाते हैं। वही मुर्दे को श्मशान पहुंचाते हैं।" "हे भगवान, कैसे हो गए हैं शहर के पढ़े-लिखे,धनी-मानी लोग।"- चौधरी साहब ने हंसकर कहा।

"सबमें अहंकार की गैस भरी है, वही झुकने नहीं देती है।"-रमा सिंह ने मुंह बिचकाकर कहा। धीरे-धीरे त्रिभुवन के माता-पिता का उन कामवाली स्त्रियों से नेह-नाता जुड़ गया। उन्हें इन स्त्रियों से रोज ही बातें करते देख एक दिन सांभवी ने कहा -"हम लोग इन छोटे लोगों को ज्यादा मुंह नहीं लगाते हैं।" इतना सुनते ही चौधराइन भड़क गईं-"यह क्या बात हुई बहू? यही तो समाज की सुंदरता है। छोटे-बड़े सभी अपनी सीमा के अनुसार एक-दूसरे की सहायता हेतु तत्पर रहें,तभी साथ-साथ रहने-बसने का मजा है। हमारे गांव में देखो,जो गरीब है वह हाथ-पैर से सेवा-सहयोग हेतु तत्पर रहता है और जो धनी है,वह उदारता पूर्वक उसकी आर्थिक सहायता करता है। दोनों की जरूरतें एक-दूसरे से पूरी हो जाती हैं।" इसके बाद सांभवी का साहस नहीं हुआ कि वह अपनी सास से इस संबंध में बहस करे। त्रिभुवन के पुत्र का जन्म अस्पताल में हुआ। इस उपलक्ष्य में उसे फोन पर खूब बधाइयां मिलीं, कई बुके भी डिलीवरी ब्वाय दे गए, मगर सशरीर बधाई देने हेतु कोई उपस्थित नहीं हुआ। एक माह बाद त्रिभुवन अपने माता-पिता को पिपरगांव पहुंचाने जा रहा था,नीचे लिफ्ट के पास अनेक कामवाली स्त्रियां, ड्राइवर और सिक्योरिटी गार्ड उन्हें विदा करने के लिए खड़े थे। ड्राइवर और गार्डों ने चौधरी साहब को पैर छूकर विदा किया तो महिलाओं ने सिसकते हुए त्रिभुवन की मां के पैर छूकर उन्हें विदा किया। जब एक लड़की त्रिभुवन की मां के पैर छूने के लिए झुकी तो वह उसे गले लगाकर बोलीं- "कुंवारी कन्या देवी सरूप होत हैं, उनसे पांव नाय छुआए जात।"

उन्होंने उन सभी महिलाओं को बीस-बीस रुपए दिए। जब एक महिला ने रुपए लेने से मना किया तो वह बोलीं- "बड़े-बुजुर्गों के आशीर्वाद को लेने से मना नहीं करते।" यह सुनकर उस महिला को बीस रुपए का नोट लेना ही पड़ा। कालोनी के लोग भीड़ को देखकर अपने अपने फ्लैट की बालकनी में आकर आश्चर्य से यह विदाई का दृश्य देखने लगे। उनमें से कुछ ने बुदबुदाते हुए कहा- "कैसे कैसे लोग हैं दुनिया में।" इधर कालोनी के वासिंदों के विषय में सोचते हुए पिपरगांव के चौधरी और चौधराइन भी यही वाक्य मन ही मन दोहरा रहे थे।

लघुकथा

मर्यादा की चौखट

विनोद कुमार डबराल
बरेली

अपनी शादी के बाद जब मैं ससुराल आई तो मैंने अपने मन में ढेर सारे सपने संजोये हुए थे। सोचा था शादी के बाद मैं अपने सभी सपनों को हकीकत में बदल दूंगी,किंतु शादी के एक सप्ताह बाद ही मेरे सारे सपने चूर-चूर होकर बिखर गए। इसका एकमात्र कारण था मेरी सासू मां। मेरी हर बात पर टोकना और मुझे परिवार की मर्यादा के बारे में लैक्चर देना उनकी एक आदत सी हो गयी थी। मेरी सासू मां हमेशा सर पर पल्लू ढंककर रखती थीं,जो मुझे कतई पसंद नहीं था। मुझे कब क्या पहनना है,क्या नहीं, कहां जाना है,कहां नहीं, किससे मिलना है, किससे नहीं,उनकी इन्हीं टोका-टोकी से मैं अपने को असहाय सा महसूस करने लगी थी। अपने मायके में मैंने हमेशा अपना अपने मन से जीवन गुजारा था,क्योंकि मेरे मायके का परिवार पूर्ण रूप से शहरी परिवेश में ढला हुआ था।

शुरु-शुरु में मैंने अपने पति से सासू मां की ज्यादतियों के बारे में दबी जुबान से शिकायत करने की कोशिश की थी, किंतु हमेशा मेरे पति मेरी व्यथा को हंसकर टाल दिया करते थे और हर बार एक ही बात दोहराते थे कि "मां कभी भी तुम्हारा अहित नहीं चाहेगी और यह तुमको तब पता चलेगा जब तुम भी अपनी बहू की सासू मां बनोगी'', लेकिन मैंने भी ठान लिया था कि जब मेरी बहू आएगी तो मैं उसे उसकी इच्छा अनुसार उसे पहनने ओढ़ने की पूरी आजादी देने की कोशिश करुंगी। फिर मेरी शादी के २२ वर्ष बाद वह घड़ी आ गई,जब मेरे बेटे की शादी हुई। मेरी बहू एक अमीर खानदान की उच्च शिक्षा प्राप्त होनहार और खूबसूरत बहू थी। चूंकि मैं अपनी सासू मां के ग्रामीण परिवेश की मर्यादा उस पर नहीं लादना चाहती थी, इसलिए मैंने अपनी बहू को उसकी इच्छा अनुसार पहनने ओढ़ने की आजादी दे दी। बेटे की शादी के एक माह बाद मैं घर के दालान में अपनी सासू मां के साथ सब्जी काट रही थी तो तभी मेरी नजर अपनी नई नवेली बहू पर पड़ी जो शायद किसी काम से बाहर जा रही थी। एकाएक मेरी नजर उसके पहनावे पर पड़ी तो मेरा कलेजा उछलकर मेरे गले में अटक सा गया। मेरी बहू छोटी शार्ट्स और खुले गले का टाप पहने हुई थी। यह देखकर मैं अपनी नई नवेली बहू को टोकते हुए बोली,"यह क्या बहू,अभी तक तुम्हारे हाथों की मेंहदी तक नहीं उतरी और तुम ऐसे वाहियात कपड़े पहनकर बाहर जा रही हो''।

मेरे अनायास इस प्रकार से टोकने से मेरी बहू अचकचा सी गई। फिर अपनी त्योरियां चढ़ाते हुए बोली,''आप शायद भूल गईं कि आपने ही मुझे मेरी पसंद के कपड़े पहनने की आजादी दी थी। आखिर मेरे इन कपड़ों से आपको क्यों तकलीफ हो रही है? यदि आपको मेरे कपड़े अच्छे नहीं लग रहे हैं तो आप अपनी नजरें फेर सकती हैं''। कहते-कहते बहू बाहर निकल गई। नई नवेली बहू के इस अनापेक्षित व्यवहार से मैं टूट सी गई। तभी मेरी नजर अपनी सासू मां पर पड़ी जो अवाक सी होकर मुझे देख रही थी और दूसरी ओर मेरी नई नवेली बहू घर की मर्यादा की चौखट लांघ कर बाहर जा रही थी।

समीक्षा

मन को छूने और मन पर छा जाने वाली गजलें

मुरादाबाद में गजल की एक समृद्ध एवं पुष्ट परंपरा रही है जिसने मुरादाबाद की प्रतिष्ठा और पहचान को विश्वभर में नई ऊंचाइयां दीं। यहां 17 वीं शताब्दी के नवलराय वफा की शायरी से शुरू होकर जिगर मुरादाबादी, कमर मुरादाबादी, गौहर उस्मानी, गगन भारती, डॉ.मीना नकवी से होती हुई गजल की यह खुशबूदार यात्रा वर्तमान में ग़ज़ल की इसको अपनी महत्वपूर्ण रचनाधर्मिता से पुष्ट और समृद्ध करने वाले वरिष्ठ गजलकार डॉ.मुजाहिद फ़राज़ तक आती है जिनके हाल ही में प्रकाशित ग़ज़ल-संग्रह 'ख्वाब समंदर के' की 71 ग़ज़लों, 8 नज्मों तथा 50 दोहों से गुजरते हुए स्पष्टतः महसूस किया जा सकता है कि उनकी गजलें,जहां एक ओर भाषाई स्तर पर 'हिन्दुस्तानी गजल' के भव्य स्वरूप में अवतरित हुई हैं।

वहीं दूसरी ओर गजल के परंपरागत स्वर के साथ-साथ वर्तमान समय में उपजीं चिंताएं, उपेक्षाएं, विवशताएं और आशंकाएं भी उनकी गजलों में उपस्थित हैं,जिन्हें उन्होंने बहुत ही प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है-'वो आजमाएं मुझे, उनको आजमाऊं मैं। फिर आंधियों के लिए इक दिया जलाऊं मैं।। उदास आंखों को सौगात देके अश्कों की। ये उसने खूब कहा है कि मुस्कुराऊं मैं।। फसाद, कत्ल, तअस्सुब, फरेब, मक्कारी। सफेदपोशों की बातें हैं, क्या बताऊं मैं।। आज भी किसान अपनी हाड़तोड़ मेहनत का सही प्रतिफल पाने को तरसता है। किसान की इसी पीड़ा को अभिव्यक्त करता फ़राज़ साहब का शे'र जो सीधे मन को छू जाता है और सोचने पर विवश कर देता है- 'ज़मीन देगी अमीरों को और फ़स्ल अभी। अभी ज़मीन पे भूखा किसान बाक़ी है।।'

हालांकि गजल का मूल स्वर ही श्रृंगारिक है, प्रेम है। कोई भी रचनाकार गजल कहे और उसमें प्रेम की बात न हो ऐसा संभव नहीं है। किंतु प्रेम के संदर्भ में हर रचनाकार का अपना दृष्टिकोण होता है, अपना कल्पनालोक होता है। फ़राज़ साहब ने भी अपनी गजलों में जहां एक ओर सामयिक यथार्थ को बड़ी ही संवेदनशीलता के साथ महसूस करते हुए उकेरा है। वहीं दूसरी ओर काग़ज़ के कोरेपन की तरह पवित्र प्रेम को भी मिठास की खुशबू भरे शब्द दिए हैं- 'फिर आज उतरा है जैसे कपास पहने हुए। ख्याल उसका गजल का लिबास पहने हुए।। हंसी गुलों की है चेहरे पे रक्स करती हुई। और उसका लहजा लगे है मिठास पहने हुए।।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि फ़राज़ साहब की गजलों के अनेक अश्'आर मन को छूते भी हैं और मन पर छाते भी हैं। 'ख्वाब समंदर के' शीर्षक उनकी यह ग़ज़ल-कृति निश्चित रूप से चर्चित होगी और अपार प्रतिष्ठा पाएगी, ऐसी आशा भी है और विश्वास भी।

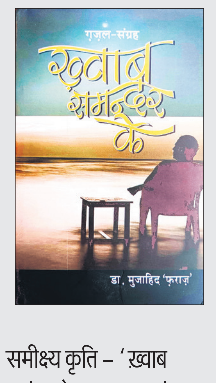

समीक्ष्य कृति - 'ख्वाब समंदर के' (ग़ज़ल-संग्रह)
रचनाकार - डॉ. मुजाहिद फ़राज़,
प्रकाशक - गुंजन प्रकाशन, मुरादाबाद।
प्रकाशन वर्ष-2024
मूल्य- रु. 200/-(हार्ड बांड)
समीक्षक- योगेन्द्र वर्मा 'व्योम'

बतकही

बुजुर्ग और वाशरूम

सीमा राय द्विवेदी
लखनऊ

मैं पतिदेव से,"जानती हो वह मेरी मित्र है न अर्शी उसके पापा परसों बाथरूम में फिसलकर गिर गए और फिर वहीं बेहोश हो गए। जब ज्यादा देर तक नहीं निकले तब लोगों ने दरवाजा खटखटाया। बाद में दरवाजा तोड़कर निकालना पड़ा, हॉस्पिटल में एडमिट हैं। डॉक्टर ने ब्रेन हेमरेज बताया,देखो क्या होता है। ईश्वर सब ठीक करें!"

पतिदेव, "अरे यह तो बड़ी मुसीबत आ गई उन लोगों पर,ऐसे ही मेरा एक मित्र डायबिटिक था। बाथरूम में ही चल बसा,उसको भी दरवाजा तोड़कर ही निकालना पड़ा था।"

मैं, "हां मुझे याद है!"

पतिदेव, "जब घर में ज्यादा सदस्य न रहते हो तो मुझे लगता है,बुजुर्ग लोगों को बाथरूम का दरवाजा बंद ही नहीं करना चाहिए। क्या फर्क पड़ता है अगर कोई आ भी जाएगा तो। कम से कम ऐसी मुसीबत के समय उनको सहायता तो मिल जाएगी और हां दूसरी बात। तुम भी ध्यान रखा करो बाथरूम से जब भी निकलो बायपर मारे बिना मत निकला करो। बाथरूम में फिसलन होता है और तुम जो अपना इतना वेट गेन कर ली हो न तुम्हारे लिए तो मुसीबत ही हो जाएगी। फिर करती रहना अपनी किताबों के विमोचन!"

मैं,"आपके कहने का क्या मतलब है कि मैं वाइपर बिना मारे निकल जाती हूं। कभी अपने बच्चों को भी टोक दिया करो कुछ,जब देखो तब मेरे ही पीछे पड़े रहते हो और हां ज्यादा मेरे वेट पर मत जाना,खाते पीते घर से हूं समझ में आया,जो लोग स्लिम ट्रिम हैं वह कौन सा समाज में रहकर बहुत बड़ी उपलब्धि करें ले रहे हैं। कौन सा इतिहास बना दिया है उन्होंने स्लिम रहकर...हुंह!"

पतिदेव,"तुमसे मैंने कब कहा कि तुम स्लिम हो जाओ,बस यह समझाया है कि थोड़ा अलर्ट रहा करो। बिस्तर पकड़ लोगी। तो तुमको ही दिक्कत होगी।"

मैं, "ठीक है ठीक है,लेकिन यह बात आपकी समझ में आई कि बाथरूम का दरवाजा बंद करना कोई जरूरी नहीं है। कम से कम आपातकाल में आप सहायता तो कर सकोगे कहीं गिर-विर गई बाथरूम में तो।"

पतिदेव,"गिरे तुम्हारे दुश्मन तुम तो बस खाओ पियो मौज करो। और दो चार पुस्तकें और लिखो शुभकामनाएं!"

मैं,"पति हो तो ऐसा! कितने शुभ विचार हैं। आप की शुभकामनाएं तो मेरे सर आंखों पर,अगर दाल में छौंक लग गई हो तो खाने आ जाऊं।"

पतिदेव, "हे ईश्वर इसको खाने के अलावा कुछ सूझता ही नहीं बस खिलाते - पिलाते रहो। उसके बाद कहती फिरेगी की मोटी होती जा रही हूं। जाने अक्ल बंट रही थी तो यह लड़की कहां खड़ी थी।"

मैं ,"क्या बके जा रहे हो!"

पतिदेव, "मेरी इतनी कहां हिम्मत आओ और खाना खाओ भकोसो!"

यात्रा वृत्तांत

श्रीलंका के रमणीय पहाड़ी इलाके

नुवारा एलिया मध्य प्रांत, श्रीलंका के पहाड़ी इलाके में एक महत्वपूर्ण खूबसूरत शहर है। इसके नाम का अर्थ है "मैदान पर शहर" या "प्रकाश का शहर"। सुरम्य परिदृश्य और समशीतोष्ण जलवायु के साथ यह शहर जिले के प्रशासनिक राजधानी है। यह 1,868 मीटर की ऊंचाई पर है और शांत जलवायु वाला श्रीलंका का सबसे ठंडा क्षेत्र है। अपनी ठंडी जलवायु और औपनिवेशिक युग के बंगलों ट्यूडर-शैली के होटलों, अच्छी तरह से सुसज्जित बाड़ों और सुंदर बगीचों के कारण यह "लिटिल इंग्लैंड" भी कहा जाता है। एक समय यह श्रीलंका के चाय उद्योग के मेहनती और कड़ी शराब पीने वाले अंग्रेजी और स्कॉटिश अग्रदूतों के लिए पसंदीदा ठंडी जलवायु से बचने का स्थान था। नुवारा एलिया को श्रीलंका की "स्ट्रॉबेरी राजधानी" भी कहा जाता है।

108 शिवलिंगम का मंदिर

शैलेन्द्र प्रताप सिंह
से.नि., पुलिस महानिरीक्षक

नुवारा एरिया में चाय बागानों में काम करने के लिए गोरे साहब दक्षिण भारत से तमिल लोगों को लाए थे, क्योंकि स्थानीय सिंहली लोग बागानों में मजदूरी का काम नहीं करते थे। इसी कारण आज श्रीलंका के 25 जिलों में नुवारा एलिया जिला तमिल जनसंख्या का प्रभुत्व वाला जिला है। तमिल लोग अपने यहां रहने के दौरान मंदिर बनवाए जिनमें मुख्यतः शिव के हैं। एक मंदिर सीता मां (सीथा अम्मन) के लिए बनवाया गया था। इसी मंदिर के नाम पर नुवारा एलिया का यह इलाका सीथा एलिया कहलाता है। हमारे गाइड ने मंदिर के बगल से बहती नदी में हनुमान का पैरों के निशान और अशोक वृक्ष भी दिखाया। सीता अम्मन मंदिर के बाद हम सबको सीता अग्नि परीक्षा स्थल ले जाया गया। यह मुख्यतः एक बौद्ध मंदिर है और नाम है दिवुरुम्पोला मंदिर। सिंहली में दिवुरूमपोला नाम का अर्थ "शपथ का स्थान" है। इस आधार पर यह माना जाता है कि दिवुरूमपोला ही वह स्थान है, जहां सीता की अग्निपरीक्षा हुई थी। मंदिर को लंबे समय से विभिन्न पक्षों के बीच विवादों को सुलझाने में शपथ लेने के लिए एक उपयुक्त स्थान माना जाता है। हाल ही में इस मंदिर में रामायण पेंटिंग जोड़कर इसे प्रसिद्ध रामायण प्रसंग से संबंधित भी कर दिया गया है। पीछे की तरफ एक स्थान पर सीता जी द्वारा अग्नि परीक्षा करना बताया, जहां मिले कमरे में सीता जी की मूर्ति है और उसके बाहर हनुमान जी की। हाल के वर्षों में यह मंदिर श्रीलंका में एक प्रमुख हिंदू तीर्थ स्थल बन गया है। अग्निपरीक्षा या अग्निपरीक्षा महान भारतीय महाकाव्य, रामायण के सबसे प्रसिद्ध प्रसंगों में से एक है। रावण के महल में सीता के रहने की अफवाहों से परेशान होकर राम ने सीता की पवित्रता का प्रमाण मांगा। इसके चलते अंततः सीता को अग्नि परीक्षा देने का संकल्प लेना पड़ा। उन्होंने लक्ष्मण से चिता जलाने को कहा। सीता ने खुद को बलिदान करते हुए आग में छलांग लगा दी, अग्नि जलती हुई चिता से उठी और उसे आग की लपटों से उठा लिया और उसकी पवित्रता की पुष्टि करते हुए उसे राम को अर्पित कर दिया। राम ने अंततः स्वीकार किया कि उन्हें सीता की निष्ठा पर कभी संदेह नहीं था, लेकिन लोगों के सामने उनकी पवित्रता की सच्चाई साबित करने के लिए परीक्षण की आवश्यकता थी। नुवारा एलिया शहर के ठीक बाहर हकगाला बॉटैनिकल गार्डन है। इसे 1861 में अंग्रेजों ने रिसर्च गार्डन के रूप में विकसित किया था, जो आज निश्चित रूप से देखने लायक गार्डन है। बागवानों की एक सेना इस जगह की बहुत अच्छे से देखभाल करती है। यह उद्यान लगभग 1700 मीटर की ऊंचाई पर है और इसमें बहुत सारे समशीतोष्ण पौधे और पेड़ हैं। मॉन्टेरी साइप्रस यहां प्रमुखता से मौजूद हैं, लेकिन यहां ऑस्ट्रेलिया के बुनिया बुन्या पाइन और नॉरफॉक आइलैंड पाइन पेड़ भी हैं। वहां एक गुलाब उद्यान, कई ग्रीनहाउस, एक रॉक गार्डन एक जापानी उद्यान, एक आर्किड संग्रह, देवदार और विशाल सरू आदि भी है।

यह आकर्षक उद्यान एक शांतिपूर्ण स्थान हैं। मुख्य आकर्षणों में एक बढ़िया गुलाब उद्यान, एक जापानी उद्यान, एक आर्किड संग्रह, देवदार और विशाल सरू शामिल हैं। हालांकि विदेशियों के लिए प्रवेश शुल्क बहुत अधिक है। रोपण का मौसम जनवरी और मार्च के अंत के बीच होता है और इस समय बगीचे वास्तव में अच्छे नहीं दिखते।

इसके बाद हम ग्रेगरी झील गए। इसे ग्रेगरी जलाशय भी कहा जाता है और शहर के केंद्र में है। इस जलाशय का निर्माण 1873 में ब्रिटिश गवर्नर सर विलियम ग्रेगरी के कार्यकाल के दौरान थलागाला धारा को बांध कर किया गया था। बोटैनिकल गार्डन भी उन्हीं के कार्यकाल में बना था। जलाशय और आसपास का क्षेत्र ग्रेगरी झील क्षेत्र बनाते हैं। ब्रिटिश काल में ग्रेगरी झील का उपयोग जल क्रीड़ाओं और मनोरंजक गतिविधियों के लिए भी किया जाता था।

वर्ष 1913 में झील के पानी को एक टनल के रास्ते निकालकर जल विद्युत स्टेशन बनाया गया। पावर स्टेशन आज भी शहर को बिजली की आपूर्ति जारी रखता है। इसके बाद गायत्री पीदम ले गए। पता चला स्वामी रमन कालीमुथु मुरुगेसु एक गायत्री सिद्धार थे और यही श्रीलंकाथीश्वर मंदिर के निर्माता थे। तमिल परंपरा में सिद्धार (संस्कृत सिद्ध से) एक सिद्ध व्यक्ति होते हैं जिसने सिद्धि से आध्यात्मिक शक्तियां प्राप्त करते हैं। मुरुगेसु भारत आए और श्री कन्नैया योगी आश्रम में भर्ती हुए, वहां उन्होंने गायत्री मंत्र पर शोध किया और अपने शोध के आधार पर कई किताबें लिखीं। इसलिए उनके शिष्य उन्हें गायत्री सिद्धार के नाम से भी जानते हैं। इन्हीं गायत्री सिद्ध स्वामी मुरुगेसु अपने एकमात्र प्रयासों से 1974 में गायत्री पीदम (श्रीलंकाथीश्वर मंदिर) के संस्थापक हैं। यह देवी गायत्री को समर्पित पहला मंदिर है। गायत्री सिद्धार ने इस स्थान को इसलिए चुना, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि त्रिमूर्ति-शिव, ब्रह्मा और विष्णु, यहां तब प्रकट हुए जब रावण के पुत्र राजकुमार मेगनाथ को, जिसे इंद्रजीत के नाम से भी जाना जाता है, ने शिव तपस्या और निकुंबला यज्ञ किया था। इसलिए गायत्री पीदम महत्वपूर्ण स्थलों में से एक है। श्रीलंकाथीश्वर मंदिर श्रीलंका में गायत्री अम्मन के लिए बनाया गया पहला और सबसे महत्वपूर्ण मंदिर है और इस मंदिर में स्थापित शिव लिंगम को श्री शिवबालायोगी महाराज द्वारा पवित्र नदी नर्मदा से लाया गया था।

देश और विदेश की प्रमुख हस्तियों सहित स्वामी जी के सैकड़ों प्रशंसक थे। उन्होंने पूरी दुनिया में शांति और सौहार्द के लिए अथक प्रयास किया था। मुरुगेसु के शिष्यों में एक स्वामी शंकरानंद महाराजजी थे, जो दक्षिण अफ्रीका में गायत्री पीठ चलाते हैं, जिसे 1998 में स्वामी मुरुगेसु ने व्यक्तिगत रूप से प्रतिष्ठित किया था। दक्षिण अफ्रीका शाखा में स्वामी मुरुगेसु की कुछ संपत्ति वाला एक समाधि मंदिर भी स्थापित है। एक अन्य शिष्य स्वामी राधाकृष्णन हैं, जो जर्मनी में एक ध्यान केंद्र चलाते हैं और गायत्री ध्यान वहां आयोजित किया जाता है। स्वामी मुरुगेसु ने अपनी आत्मा को नाशवान शरीर से मुक्त करने के लिए महासमाधि में प्रवेश करने का निर्णय लिया और 24 सितंबर 2007 को भारत में "जीवन मुक्ति" प्राप्त की और उनकी समाधि श्रीलंका के गायत्री मंदिर में रखी गई। वे शिष्यों और भक्तों का हमेशा मार्गदर्शन करते रहते हैं। अब गुरु के मार्गदर्शन के अनुसार 108 "शिवलिंगम' के लिए मंदिर की स्थापना की गई है।

पिनावाला हाथी अनाथालय

श्रीलंका सरकार के एक मंत्री के प्रयास से यह अनाथालय श्रीलंकाई वन्यजीव संरक्षण विभाग द्वारा जंगल में पाए जाने वाले अनाथ शिशु हाथियों को बचाने, उन्हें पालने के लिए सात हेक्टेयर के नारियल के बागान में की गई थी। यह श्रीलंका में बना यह पहला हाथी अनाथालय है। इसके अलावा, इसका उपयोग हाथियों के प्रजनन केंद्र के रूप में भी किया जाता है, जो श्रीलंका में राष्ट्रीय चिड़ियाघर को संदर्भित करता है। राष्ट्रीय चिड़ियाघर का एक हिस्सा भी वर्तमान में अनाथालय के पास खुला है। वर्तमान में अनाथालय में नर और मादा दोनों हाथी सहित 60-70 से अधिक हाथियों का निवास है। वैकल्पिक रूप से, हाथियों को कई क्षेत्रों से यहां लाया जाता है, जिन्हें उनकी मां ने छोड़ दिया है या अपने जंगली वातावरण से निकल चुके हैं। नतीजतन हाथी अनाथालय स्थानीय और विदेशी पर्यटकों व प्रकृति प्रेमियों के बीच एक पसंदीदा स्थान बन गया है और श्रीलंका के सबसे लोकप्रिय पशु आकर्षणों में से एक है। श्रीलंका के तमाम वन्यजीव प्रेमियों के अनुसार यहां हाथियों का प्रजनन भी किया जाता है और उन्हें एक पर्यटक आकर्षण के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। मस्ट' (प्रजनन हार्मोन से जुड़ी एक आक्रामक अवधि) के दौरान नर हाथियों को जंजीर से बांधा जाता है जिससे हाथी के पैरों में घाव हो जाते हैं, हाथियों को 'अंकस' (स्पाइक वाला एक शार्क हुक) से दर्द भी दिया जाता है, हाथियों को पर्यटक राजस्व लाने के लिए भी उपयोग किया जाता है और इस कारण वे इस प्रोजेक्ट का विरोध करते हैं। मेरा मानना है कि इस प्रोजेक्ट से खूब पर्यटक आते हैं।

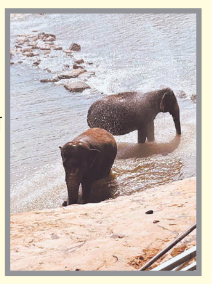

गर्मी में बरतें सावधानी

गर्मी अब दहलीज तक आ चुकी है। गर्मी एक ऐसा मौसम है जिसमें बच्चे बहुत खूश होते है, क्योंकि स्कूल की छुट्टियां होने से उनको पढ़ाई से निजात मिलती है। लगभग दो महीने की छुट्टी में वे खुब धमा चौकड़ी करते हैं। यह बच्चों के लिए बहुत ही रुचि पूर्ण और मनोरंजक मौसम है, क्योंकि इस दौरान उन्हें समर कैंप, तैराकी करने, पहाड़ी क्षेत्रों में जाने, आइसक्रीम खाने, लस्सी पीने, पसंदीदा फल खाने आदि का मौका मिलता है। यही गर्मी का मौसम जीवन की फिलॉसफी भी बताता है। इस मौसम की आहट पतझड़ से होती है और अंत वसंत से। कहते हैं वसंत सबसे सुंदर और सुहाना मौसम होता है। शायद ही कोई विश्वास करेगा कि झुलसती गर्मी न हो तो झमाझम बारीश भी नहीं होगी। गर्मी का मौसम फसलों की कटाई और जीवन के गीत का मौसम होता है। गर्मी के कारण ही फसल पकती है, खाने योग्य बनती है। इस मौसम में विषैले कीट पतंग नष्ट हो जाते हैं।

डॉ. धीरज सिंह
मुंबई

मनुष्य को सबसे ज्यादा विटामिन डी की आपूर्ति इसी मौसम की वजह से ही होती है। यह मौसम शादी-विवाह के लिए भी सर्वथा उपयुक्त होता है। इतने सारे वरदान के बावजूद गर्मी श्राप के तौर पर लू भी देती है, इस दौरान असमय ही अनेक लोग काल की गाल में समा जाते हैं। जलवायु परिवर्तन की वजह से भारत में लू से मरने वालों की तादाद दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। अव्यवस्थित विकास और प्रकृति से छेड़छाड़ की वजह से भारत में जलवायु प्रभावित हुई है।

ग्रीष्म ऋतु साल का सबसे गर्म मौसम होता है जिसमें दिन के समय बाहर जाना काफी मुश्किल होता है। बहुत से लोग गर्मियों में सुबह में टहलना पसंद करते हैं। इस मौसम में धूल से भरी हुई, शुष्क और गर्म हवा पूरे दिन चलती रहती है। कभी-कभी लोग अधिक गर्मी के कारण हीट-स्ट्रोक, पानी की कमी, डायरिया, हैजा और अन्य स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों से भी प्रभावित हो जाते हैं। कुछ ही दिनों में यह अपने विकराल और वीभत्स रूप में होगी।

गर्मी का मौसम दस्तक दे चुका है। अतः ऐसे में अब हमें सावधान होना होगा, खासकर बच्चों और बुजुर्ग वार पर ज्यादा ध्यान देना होगा। पहनावे की बात करें तो गर्मी के मौसम के दौरान हमें आरामदायक सूती कपड़े पहनने चाहिए। हमें गर्मी की ऊष्मा से बचने के लिए ठंडे पदार्थों का सेवन करना चाहिए। हमें पूरे मौसम में स्वस्थ और तंदुरुस्त रहने के लिए बहुत सी सावधानियां रखनी चाहिए।

दोपहर के समय सूरज सर पर होने से गर्मी अधिक महसूस होती है, ऐसे में कोशिश यह होनी चाहिए कि सुबह 11 बजे से दोपहर 04 बजे के बीच बाहर निकलने से परहेज करना चाहिए। किसी जरूरी काम की वजह से निकलने की नौबत आ भी गई तो सनस्क्रीन क्रीम लगा के निकले। गमछा या गीला तौलिया इस्तेमाल करें, छतरी और टोपी का प्रयोग करें।

गर्मी के मौसम में खानपान में साफ-सफाई का पूरा ध्यान रखें, बाहर का तला, भुना, मसालेदार और खुला भोजन करने से बचे। इस मौसम में वासी, दूषित खाने या पानी से बीमार होने का खतरा अधिक होता है। बच्चों और बुजुर्गों को इस बात की जानकारी दें और साथ ही खाने के पहले हाथ धोने के लिए प्रेरित करें।

गर्मी के मौसम में जितना ज्यादा हो तरल पदार्थ का सेवन करें। पानी ज्यादा से ज्यादा पिएं। डायबिटीज मरीजों को बहुत ज्यादा प्यास और पेशाब लगती है। वे इस बात का ध्यान रखें कि शरीर में पानी की मात्रा किसी भी हालत में कम न हो। मौसमी फलों का अधिक सेवन करें, जैसे तरबूज, खरबूज, आम, संतरा, अंगूर, खीरा, ककड़ी। ये आप का पेट भरने के साथ-साथ शरीर में पानी की पूर्ति करते हैं। एक दिन में औसतन चार लिटर पानी या नींबू पानी जरूर पिएं। छाछ, लस्सी, शर्बत, आम पना, बेल या सत्तू के शर्बत का सेवन इस मौसम में बहुत फायदेमंद होता है।

गर्मी के मौसम में तापमान की अधिकता और पानी की कमी के कारण जठराग्नि धीमी हो जाती है। पाचन तंत्र कमजोर पड़ जाता है, जठर के भोजन पचाने की गति शिथिल पड़ जाती है। इसलिए एक बार में अधिक भोजन ग्रहण करने से परहेज करना चाहिए। छोटे छोटे अंतराल में दिन में चार से पांच बार भोजन लेना चाहिए। भोजन में तरल पदार्थ जरूर लेना चाहिए, ये भोजन को पचाने में ये बहुत मदद करते हैं।

इस मौसम क्या खाएं और पहनें

इस मौसम में भोजन में नमक का इस्तेमाल कम कर दें। यह उच्च रक्तचाप से बचाता है। चाय, कॉफी, शराब या अन्य कैफीन युक्त पदार्थ का सेवन करने से बचे। ये पदार्थ शरीर से पानी सोख लेते है, जिस वजह से डिहाइड्रेशन की समस्या हो जाती है। इस वजह से जान भी जा सकती है। गर्मी के मौसम में फुल बांह के ढीले सूती कपड़े पहनने चाहिए। ऐसे पोशाक आपको सूरज की खतरनाक अल्ट्रा वायलेट किरणों से सुरक्षा करती है। हल्के रंग के वस्त्र सूरज की तपिश और प्रकोप से बचाते हैं। बाहर निकलें तो आंखों की रक्षा के लिए सन ग्लासेस लगा लिया करें।

तेज गर्मी या उमस वाले मौसम में हल्की-फुल्की और सामान्य वर्जिश करनी चाहिए। अधिक वर्जिश करने से चक्कर, थकान और पानी के कमी की समस्या हो सकती है। अधिक कसरत की वजह से ऐसा कुछ होता है तो तुरंत नींबू पानी या इलेक्ट्रोल पीना चाहिए। धुप से हटकर छायादार या वातानुकूलित जगह में आराम करना चाहिए। धूप लगने पर पैरों को कुछ देर के लिए ऊपर करके लेटे रहना चाहिए। यह बेहोशी से बचाती है और शरीर जल्दी रिकवर करता है।

साप्ताहिक राशिफल

-पं. मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

मेष — इस सप्ताह नकारात्मक स्थिति से बाहर आने के लिए आप धैर्य न खोएं और आत्मविश्वास बनाए रखें। इसके अतिरिक्त इस समय में आपको बिना किसी भी गलती के अपमान का सामना करना पड़ सकता है। यह आपको निराशा देगा।

वृष — इस सप्ताह वित्तीय लाभ भी अधिक होने की संभावना बन रही है। इसके अतिरिक्त नए कार्यों को शुरु करने के लिए भी समय अनुकूल नहीं है। आपके खर्च नियंत्रण से बाहर जा सकते हैं। कुछ यात्राएं थकाने वाली और आपकी सेहत और धन की हानि का कारण बन सकती है।

मिथुन — यह सप्ताह जीवन के लिए उत्कृष्ट साबित होगा। यह समय सुनिश्चित कर रहा है कि आपको वरिष्ठ अधिकारियों की वांछित सलाह, समर्थन और सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी में पदोन्नति की शीघ्र उम्मीद बन रही है। यह समय देवी काली की पूजा के लिए सबसे उपयुक्त मुहूर्त है।

कर्क — इस सप्ताह प्रार्थना कार्यों में भाग्य का विशेष सहयोग प्राप्त हो रहा है। इस समय किसी भगवान या देवी के मंदिर की यात्रा की संभावना बन रही है। यह समय ग्रहों की स्थिति के कारण उपाय करने के लिए विशेष अनुकूल है। सप्ताह के मध्य भाग में वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा।

सिंह — यह सप्ताह स्वास्थ्य, खुशी, आत्मविश्वास और धैर्य के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। इस समय की ग्रह स्थिति आपके लिए निराशापूर्ण और हताशापूर्ण बनी हुई है। आपको अपना आत्मविश्वास और धैर्य बनाए रखना होगा तथा आपके माता-पिता को सेहत का ध्यान रखने की सलाह दी जाती है।

कन्या — इस सप्ताह की शुरुआत में आपमें आत्मविश्वास कुछ कम रहेगा। फिर भी आय में वृद्धि के उद्देश्यों को लेकर जीवनसाथी के साथ आपसी सहयोग और तालमेल अच्छा रहेगा। सप्ताह के मध्य में कुछ स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं रहेंगी और जोखिमपूर्ण क्षेत्र से अप्रत्याशित स्रोत से अचानक वित्तीय लाभ प्राप्त हो सकते हैं।

तुला — इस सप्ताह यात्राओं पर जाना आपके लिए सुखद रहेगा। आप अपने खर्च और प्रतियोगी परीक्षाओं का प्रबंधन करने की योजना बनाएंगे। आप बाजार की कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करने संबंधित विपणन की योजना को आकार देने के मामले में एक अच्छे रणनीतिकार सिद्ध होंगे।

वृश्चिक — यह सप्ताह आप अपने बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य पर खर्च करेंगे। इसके अलावा मनोरंजन से संबंधित गतिविधियों पर भी खर्च होंगे। आपके भावनात्मक संबंध अचानक से मजबूत होंगे। कुछ मुकद्दमेबाजी के मामलों को सुलझाने और स्वास्थ्य समस्याओं का इलाज कराने में ही व्यय हो सकते हैं।

धनु — इस सप्ताह के आरम्भ में स्थिति बहुत तनावपूर्ण, थकाऊ, घर-परिवार में कड़वाहट का माहौल रहेगा, इसका प्रभाव आपकी कार्यकुशलता, आत्मविश्वास और स्वास्थ्य पर पड़ेगा। अपनी माता के सेहत को लेकर आप चिंतित रहेंगे। इन सभी कठिनाइयों के बावजूद आपको अपना धैर्य बरकरार रखना होगा।

मकर — इस सप्ताह आप व्यावसायिक, कार्यक्षेत्र और सामाजिक जीवन में अपने उल्लेखनीय प्रयासों के लिए आपके दोस्त और रिश्तेदार सराहना करेंगे। मित्रों और रिश्तेदारों से अच्छे संबंध आपकी सफलता में सहयोगी बनेंगे।

कुंभ — इस सप्ताह आपकी समृद्धि, परिवार में एकता और अखंडता के संकेत मिल रहे हैं। परिवार के सभी सदस्य आपसी रिश्तों को मजबूत करने के लिए प्रयासरत रहेंगे। परिवार में शुभ समारोह संपन्न होने की संभावना रहेगी। आपको अपने दोस्तों, रिश्तेदारों और भाई-बहन से बहुत स्नेह प्राप्त होगा।

मीन — इस सप्ताह आपकी कार्यकुशलता और कौशल में सुधार होगा। आपका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य सप्ताह भर ठीक रहेगा। आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा जिसका आप आनंद लेंगे। कार्यक्षेत्र में आपके कार्यों की सराहना होगी। आपको परिवार के सदस्यों के सहयोग से अधिक वित्तीय लाभ प्राप्त होंगे।

वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

काकुरो 78

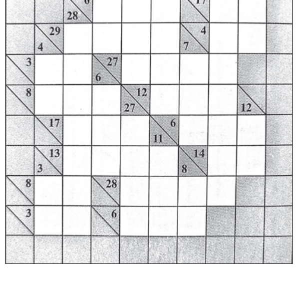

काकुरो 77 का हल

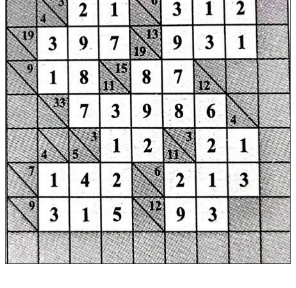

खाना खजाना

उगादि पचड़ी

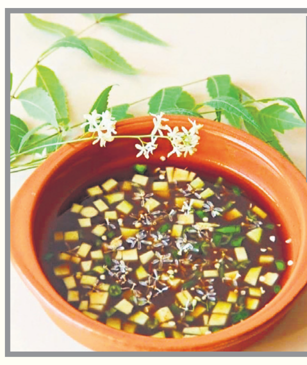

सामग्री

- नीम की ताजी पत्तियां और फूल 1/4 कप
- कुटा हुआ गुड़ 1/2 कप
- बारीक कटी हुई/ ग्रेटेड हरीमिर्च 2
- नमक 2 चुटकी
- इमली का पल्प 3 बड़े चम्मच
- बारीक टुकड़ों में कटी हुआ कैरी कच्चा आम 1/2 कप

हमारी भारतीय संस्कृति के अनुसार युगादि यानी युग की शुरुआत के नवजीवन में भोजन के छह रसों (कड़वा, तीखा, मीठा, खट्टा, नमकीन व कसाय) का आस्वादन करने के लिए उगादि पचड़ी युगों से बनाया जाने वाला पेय पदार्थ है।

एस.बी. मुथा
फूड ब्लॉगर

बनाने की विधि एक बाउल में डेढ़ कप पानी लेकर उसमें इमली का पल्प डालें और फिर उसमें कुटा हुआ गुड़ मिलाकर अच्छी तरह से चलाते हुए गुड़ के पानी में घुल जाने तक चलाकर रख दें। अब इसमें बारीक कटी हुई हरी मिर्च और नमक डालकर अच्छी तरह से हिला लें और बाद में कैरी के टुकड़े व नीम के फूल और पत्तियां डालकर अच्छी तरह चलाकर करीब 45 मिनट तक रख दें। अब आपका उगादि पचड़ी तैयार है। इसे अपने इष्ट देवी-देवताओं को अर्पण करें और परिवार के साथ पावन प्रसाद के छहों रस के जायके का आनंद लें।

फिल्म फर्रे

फर्रे क्या होते हैं, उत्तर भारत के लोग शायद जानते होंगे। ये वह कागज के छोटे टुकड़े हैं जिन पर प्रश्नों के उत्तर लिखकर अपने कपड़ों इत्यादि में छिपाकर नकल करने के लिए विद्यार्थी परीक्षाओं में ले जाते हैं। मतलब परीक्षा में बेईमानी का साधन। यह फिल्म भी उसी के बारे में हैसपर यहां बेईमानी का साधन इतना आसान और पुराना न होकर नया और टेक्निकल है।

वास्तव में यह फिल्म एक थाई फिल्म "बैड जिनियस" का ऑफिशियल एडॉप्शन है। इसे सलमान खान फिल्म्स के लिए अभिषेक यादव, जितेंद्र जीतू ने सोमेंद्र के साथ लिखा और सोमेंद्र पाधी ने ही डायरेक्ट किया है।

ब्रज राज नारायण सक्सेना
जयपुर

रोनित राय और जोया अख्तर जो खुद एक अनाथालय में पले बढ़े हैं अब बड़ी मेहनत और ईमानदारी से लड़कियों के लिए एक छोटा सा अनाथालय चला जा रहे हैं। अनाथालय की कई लड़कियों में से नियति (अलिजेह अग्निहोत्री) बहुत जहीन लड़की है, जो अपने कक्षा से आगे की योग्यता रखती है। वह एक बार दूसरों के लिए परीक्षा देने का काम कर देती है जिसके लिए उसे रोनित राय से डांट भी पड़ती है, परंतु वह हाई स्कूल में टॉप करती है और शहर के सबसे बड़े स्कूल में स्कॉलरशिप के साथ दाखिला पा जाती है।

बाहर की दुनिया स्कूल के अमीर परंतु कम बुद्धिमान दोस्त उसके अंदर के गरीब परंतु महत्वाकांक्षी विद्यार्थी को जगा देतें हैं और फिर "फर्रे" की असली कहानी शुरू होती है। कहानी में कुछ नयापन है, परंतु उसे कहने का तरीका और सभी कलाकारों की संयमित अदाकारी ने इसे और ऊंचा उठा दिया है। ऐसा कहा गया है कि यह एडॉप्शन, ओरिजनल से भी अच्छा है।

नई लड़की अलिजेह अग्निहोत्री जो सलमान खान की भांजी बताई जाती हैं, ने अच्छी एक्टिंग की है, उसे 2024 का फिल्म फेयर बेस्ट फीमेल डेब्यू का अवार्ड भी दिया गया है। रोनित राय और जोया अख्तर दोनों कहीं भी ओवर नहीं हुए यह निर्देशक की प्रशंसा योग्य बात ही है। मैं इन दोनों की एक्टिंग से भावुक भी हो गया, पर वह एक निजी बात है।

फिल्म का बैकग्राउंड म्यूजिक और सभी गीत सुरीले हैं। सचिन जिगर का संगीत प्रभावशाली है, एक गीत बादशाह ने अपने अंदाज में भी गाया है।

फिल्म परिवार के साथ देखी जा सकती है, मगर एक बात तो है कि भले ही डिस्क्लेमर के अनुसार फिल्म परीक्षाओं में नकल या बेइमानी को बढ़ावा न देती हो, परंतु इसने एक नए तरीके को दिखाया तो है ही।

कानपुर जनपद की पुरा विरासत

कानपुर जनपद के पुरा विरासत स्थल सभ्यता विकास के प्रारंभिक चरण से गवाह हैं। नव पाषाण काल के प्रस्तरायुध कानपुर में मूसानगर से प्राप्त हुए हैं। सभ्यता विकास के दूसरे चरण धातुयुग में कानपुर के एक दर्जन से अधिक क्षेत्रों से ताम्र आयुध प्राप्त हुए। प्रदेश में सबसे पहले 1822 में 49 ताम्र आयुध बिठूर कानपुर से प्राप्त हुए थे,जो कि विभिन्न संग्रहालयों में विद्यमान हैं। कानपुर में ही पहली बार इष्टिका मंदिरों में शिखर शैली का प्रयोग किया गया था।

भीतरगांव का इष्टिका मंदिर

अनूप कुमार शुक्ल
महासचिव इतिहास समिति, कानपुर

वर्ष 1876-77 में पुराविद् अलेक्जेंडर कनिंघम जब कानपुर के भूभाग का सर्वे कर रहा था तब उसे भीतरगांव में जमीन में दफन एक टीले के आकार में यह मंदिर मिला। पुनः दूसरी यात्रा में कनिंघम ने टीले का उत्खनन कर मंदिर को संरक्षित किया। पांचवी छठी शती के इस गुप्तकालीन मंदिर की ऊंचाई लगभग 60 फुट है। पिरैमिडशिल्प में बने शिखर युक्त मंदिर का ब्रिक आर्ट और टेराकोटा पैनल आर्ट कला की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। गर्भगृह में कोई भी प्रधान प्रतिमा उपलब्ध नहीं है। बाहरी दीवारों के आलों में कलापूर्ण ढंग से उत्कीर्ण विविध देव प्रतिमाओं के साथ पशु पक्षी, मिथुन युग्म आदि अंकित हैं। टेराकोटा पैनल में गंगा, यमुना, नर नारायण, उमा महेश्वर, मधु कैटभ, विष्णु, गणेश, नाग, योगी, मल्लयुद्ध आदि के प्रमुख हैं। भीतरगांव के झींझीनाग टीले से मैत्रेय बुद्ध की प्रतिमा भी मिली इसके साथ ही गुप्त और कुषाण कालीन पुरा अवशेष भी मिले हैं। वर्ष 1908 से स्मारक का संरक्षण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग कर रहा है।

निबियाखेड़ा का शिव मंदिर

कानपुर की घाटमपुर तहसील में मुगल रोड पर स्थित निबियाखेड़ा का शिव मंदिर पंचायतन शैली का नायाब नमूना है। प्रतिहार कालीन नवीं-दसवीं शती का निर्मित निबिया खेड़ा का इष्टिका मंदिर अपने ब्रिक आर्ट के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। इस मंदिर की खोज वर्ष 1960 में अवकाश प्राप्त अधीक्षण पुरातत्वविद डॉ. लाल मोहन बहल ने की थी। नक्काशीदार ईटों से निर्मित मंदिर लगभग 30 फिट ऊंचा है। प्रधान शिवलिंग के अतिरिक्त वीणाधर शिव का अंकन ब्रह्मा जी के साथ है। प्रस्तर निर्मित द्वार शाखा में दोनों ओर गंगा यमुना और ऊपर नवग्रह पट्ट के साथ गजलक्ष्मी का अंकन हैं। प्रवेश द्वार पर विनम्र मुद्रा में नंदी विराजमान हैं। मंदिर के बाहरी ओर तक लंबवत त्रिकोणात्मक आठ पहलुओं में भद्र और कर्ण विभाजित है। मुख्य मंदिर के अतिरिक्त चारो कोनों पर लघु मंदिर स्थापित है,जो कि इस मंदिर को पंचायतन शैली का रूप देते हैं। मंदिर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संरक्षित है।

कला तीर्थ : बेहटा का जगन्नाथ मंदिर

घाटमपुर तहसील के पूर्वी भाग में सुविख्यात भीतरगांव मंदिर के समीप ही बेहटा में पुरा महत्व का कलातीर्थ जगन्नाथ मंदिर विद्यमान है। वाह्य रूप लगभग डेढ़ सौ वर्ष प्राचीन स्तूपाकार सा दिखने वाला मंदिर पुरा भग्नावशेषों से एक ऊंचे चबूतरे पर निर्मित है। पुराविदों के मुताबिक उक्त स्थान पर मध्यकाल में (1000-1100 एडी) एक विशाल प्रस्तर मंदिर था, जो कालांतर में नष्ट हो गया,लेकिन गर्भगृह का आंशिक भाग बचा रहा जिसमें से भगवान विष्णु की एक विशाल पाषाण प्रतिमा पूर्ववत स्थान पर थी जिसे आसपास के बिखरे प्राचीन स्थापत्य व पाषाण खंडों से जोड़कर मंदिर को स्तूपाकार बना दिया गया। मंदिर में प्रवेश करते ही अंधकारमय मार्ग से गर्भगृह में दाखिल होते हैं। मंदिर का गर्भगृह कई अलंकृत प्रस्तर स्तंभों से निर्मित है। भीतरी छत कीर्तिमुख व पत्रलता आदि अलंकरण है। मंदिर को विभिन्न तोरण, स्तंभ व उतरंगा आदि नवनिर्माण में उपयोग में आए हैं। गर्भगृह में एक विशाल प्रस्तरोत्कीर्णित विष्णु प्रतिमा भगवान जगन्नाथ के रूप पूजित व ख्यात है। लगभग दस फुट ऊंची यह विष्णु प्रतिमा एक ऊंचे से पादपीठ पर प्रतिष्ठित है। प्रतिमा का मुख व भुजाएं क्षतिग्रस्त हैं। प्रधान विष्णु प्रतिमा के विकृत मुख को श्यामवर्णीय आलेप कर जगन्नाथ के रूप मे मान्यता देकर वर्तमान में भी पूजा जाता है। मुख्य प्रतिमा के पार्श्व मे कुछ लघु प्रतिमाएं भी पूजित हैं। प्रतिमा के परिकर में विभिन्न रथिकाओं में विष्णु के विविध अवतार (दशावतार) उत्कीर्णित हैं। जनपद में इतनी विशाल विष्णु प्रतिमा इकलौती है। गर्भ गृह की छत के मध्य के प्रस्तर से मानसून आगमन पर वाष्पीकृत होकर कुछ पानी की बूंदे गिरने की भी बात ख्यात है,जो मानसून आगमन का संकेत देता है। जगन्नाथ मंदिर के प्रवेश द्वार व गर्भ गृह के मध्य मार्ग में दोनों ओर अंधकारपूर्ण कक्ष है जिसमें एक में मध्यकालीन शेषशायी विष्णु की शयनमुद्रा में प्रतिमा है। चतुर्भुजी विष्णु शेषशैया पर शेष फणों के घटाटोप छाया में विश्राम करते अंकित है,बायां चरण मुड़ा है व फैला हुआ दाहिना चरण खंडित है। उठे हुए दाहिने हाथ में गदा है,जबकि एक अन्य दाहिने हाथ पर उनका किरीटधारी शिर पर आश्रित है। बायीं ओर का एक हाथ खंडित है दूसरे में चक्र। नाभि से उत्पन्न कमल पर पद्मासन में ब्रह्मा अंकित है। दूसरे कक्ष में सूर्य की भव्य समभंग खड़ी हुई मुद्रा की प्रतिमा है। शिरोभाग के पीछे भव्य प्रभामंडल है। भगवान सूर्य किरीट, कुंडल, हार, यज्ञोपवीत, कौस्तुभ वनमाला व मेखला अंकित है। पादपीठ के नीचे सूर्य अश्वों का सुंदर व गतिशील अंकन है। आंशिक रूप से खंडित प्रतिमा दर्शनीय है। यहां पर नृत्य गणेश व उमामहेश्वर की प्रतिमा भी दर्शनीय है। मंदिर के बाहर चबूतरे पर विशाल अलंकृत द्वारशाखाएं व मूर्तियों के खंडित व शेष मौजूद है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा सन् 1920 ई. से यह स्मारक संरक्षित है।

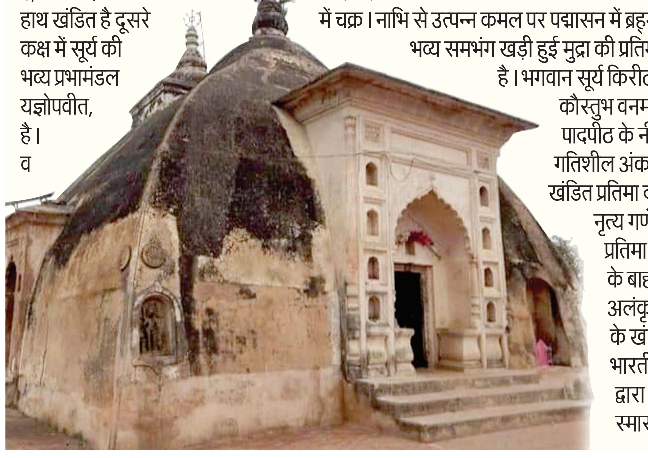

इतिहास के झरोखे से

पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

प्रो. गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

कुषाण काल के मृदभांड

कुषाण काल के पात्र प्रायः लाल रंग के तथा मोटी परत बाले मिलते हैं। इस काल में टोटीदार सुराही का बहुत प्रचलन रहा है। इस सुराही के पानी निकालने बाले मुंह पर मकर-मुख, गज मुख, स्त्री मुख, सिंह मुख आदि बने हुए मिलते हैं। इस सुराहियों की मूठ पर कभी-कभी हाथ जोड़े खड़ी हुई नंगी मूर्ति, कभी शाल भंजिका आकृति में एक हाथ ऊपर किए तथा दूसरा हाथ नीचे लटकाए खड़ी नंग्न स्त्री, रस्सी की गुंथी हुई चित्रकारी तथा फूल आदि बने मिलते हैं। इस युग के छोटे बड़े घड़ों पर स्वास्तिक, त्रिरत्न, पत्ती, फूल, वृत में बिंदुहार, मत्स्य आदि विभिन्न प्रकार के चित्र बने होते हैं। जिस साधन से गीले मटके पर ठप्पे लगाए जाते थे वे भी मिले हैं। स्याही रखने की दवात भी अहिच्छत्र में बहुत मिलती हैं।

गुप्त काल के बर्तन

अहिच्छत्र से प्राप्त गुप्त कालीन पात्रों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि गुप्त युग के प्रारंभिक काल में पात्रों का आकार कुषाण कालीन बर्तनों जैसा ही चलता रहा। यह पात्र मोटे बल के हैं और इन पर ठप्पे से विभिन्न आकार बनाए गए हैं। इन पर लाल रंग किया हुआ है। अहिच्छत्र की एक हंडिया का बाहर का शरीर तीन भागों में विभक्त किया गया है।

राजा और उसके छत्रवाहक एवं पीलवान की वेशभूषा

पंचाल प्रदेश के अहिच्छत्रा से प्राप्त एक मृण्मूर्ति से राजा और उसके छत्रवाहक हस्तिपक अर्थात् पीलवान की वेशभूषा की जानकारी मिलती है। राजा के शीश पर गुंबददार पगड़ी बंधी है, यह पगड़ी मनकों की माला से सजी हुई है। गले, बांह और हाथों में मनको की मालाएं पहनी हुई हैं। राजा की कमर में लहंगे के प्रकार का वस्त्र है, उसकी चुन्नटें स्पष्ट दिखाई पड़ती हैं। अंकुशधारी पीलवान एक अटपटी सी पगड़ी बांधे हुए हैं। शरीर पर संभवतः कंचुक धारण किए हुए हैं।

कुषाण कालीन वेशभूषा

पंचाल क्षेत्र से प्राप्त कुषाण कालीन प्रस्तर तथा मृण्मूर्तियों से तत्कालीन वेशभूषा की पर्याप्त जानकारी मिलती है। उस युग में प्रायः करके सकच्छ धोती बांधते थे। उसका अधिकतर भाग कमर में लिपटा रहता था। कंधों पर से होता हुआ तथा कोहनियों पर गिरता हुआ दुपट्टा और नाभि के पास खोंसा तथा घुटनों के मध्य लटकता हुआ पटका भी पहनते थे। धोती को नीचे खिसकने से बचाने के लिए अथवा सौंदर्य को लिए कमर-बंध भी बांधा जाता था। फूलों के गुच्छे जैसा इसका एक छोर पैरों के बीच में लटकता रहता था। शरीर पर एक दुपट्टा भी डाल लिया जाता था। उसका प्रकार यह था कि बांए कंधे से पीठ के पीछे होता हुआ आगे की ओर आकर, दाहिने घुटने को ढकता हुआ, फंदे के आकार का होकर, बांई कलाई पर पड़ा रहता था। मूर्तियों में दुपट्टे धारण करने और कमर-बंध बांधने के अनेक प्रकार पाए जाते हैं। कमर-बंध के कई फेंटों से बंधी लूंगी घुड़सवार, सईस इत्यादि पहनते थे। पुरुष प्रायः (उष्णी)-पगड़ी धारण करते थे। पगड़ी पर फूलों से सजा धातु का शीर्ष-पट्टा बांध लिया जाता था।

सैनिक वेशभूषा

अहिच्छत्र की दो मृण्मूर्तियों में दो सैनिकों को पिंडलियों के नीचे तक बंद कीट पतंग दिखाया गया है। एक सैनिक के कोट पर वृत्ताकार (गोल) घेरों से अलंकृत बनाए गए दर्पण की एक प्रस्तर की डंडी पर दो-दो स्त्री पुरुष चित्रित हैं। उनमें कमर-बंध का एक घुटने तक लटका हुआ दिखाया गया है। सिर पर पगड़ी बंधी है। हाथों में भारी कंगन और कानों में बड़े-बड़े कुंडल धारण किए हुए हैं। टखनों तक धोती पहने हुए हैं। इन कला कृतियों में भाव गांभीर्य का प्रदर्शन बहुत सजगता एवं सुंदरता पूर्वक दिया गया है। विशेषता यह है कि प्रत्येक की अपनी अलग भाव भंगिमा है। इससे अहिच्छत्र के कलाकारों की उत्कृष्ट कला क्षमता का पता चलता है तथा उस समय की वेशभूषा तथा प्रसाधन रीति, आकृति सौंदर्य का भी ज्ञान आसानी से हो जाता है।

अहिच्छत्र से प्राप्त मुद्राएं

अहिच्छत्र एवं पंचाल के इतिहास को जानने का एक बहुत बड़ा साधन हैं-मुद्राएं। अहिच्छत्र के किले से तथा पंचाल के अन्य स्थानों से प्राचीन काल के विभिन्न समयों के सिक्के मुद्राएं मिले हैं। अहिच्छत्र से सबसे प्राचीन माने जाने वाली मुद्राएं (सिक्के) जिन्हें कार्षापण कहा जाता है,प्राप्त हुई हैं। यहां से यौधेयों की प्रथम प्रकार की ताम्र मुद्राएं पर्याप्त मात्रा में मिलती हैं। इन पर एक ओर त्रिशूलधारी शिव को नंदी के पास खड़ा हुआ चित्रित किया गया है तथा दूसरी ओर चक्र त्रिशूल, वज्ज आदि बने मिलते हैं। यहां से कुषाण शासकों की मुद्राएं ढेरों मिली हैं। इसमें अंतिम कुषाण राजा वासुदेव की मुद्राएं सर्वाधिक मिलती हैं। इससे अतिरिक्त विमकउफिस, कनिष्क और हुविष्क की मुद्राएं भी मिलती हैं। अहिच्छत्र से कुछ जैसी मुद्राएं भी मिली हैं,जो तांबे की हैं जिनके अग्रभाग पर दाएं ओर मुख किए दाढ़ी वाले राजा का आवक्ष चित्र बना रहता है। पृष्ठ भाग पर यज्ञ-कुंड से ज्चाला निकलती हुई दिखाई गई है। अहिच्छत्र से गुप्त शासकों की ताम्र, रजत और स्वर्ण मुद्राएं मिली हैं। यहां के अतिरिक्त निकटवर्ती स्थलों से भी प्राप्त हुई हैं। इनमें समुद्रगुप्त चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमार गुप्त प्रथम, नंदीगुप्त तथा हरिगुप्त की मुद्राएं हैं। चंद्रगुप्त द्वितीय की स्वर्ण पत्ते से मण्डित एक ताम्र मुद्रा भी मिली है।

पश्चिम के दर्शन का इतिहास

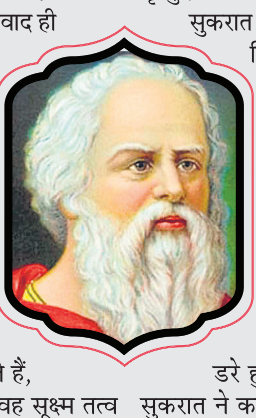

अपने युग का महान द्रष्टा सुकरात (ईपू. 469-399) एथेंस के एक गरीब परिवार में पैदा हुआ था। वह लोगों के साथ निरंतर संवाद करता रहता था और संवाद ही संवाद में सत्य की खोज भी करता था और संवाद में ही उस सत्य का प्रतिपादन भी करता था। उसने यह सत्य जान लिया था कि मानवजीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि ज्ञान ही है,ज्ञान ही मनुष्य का सर्वोच्च विकास है। उसका यह कथन प्रसिद्ध है कि ज्ञान के समान पवित्रतम कोई वस्तु नहीं हैं। यह ज्ञान तीसरे नेत्र की तरह से है।

आंखें स्थूल को देख सकती हैं, इनसे हम बाहरी संसार को तो देख सकते हैं, देखते ही हैं,किंतु जीवन और प्रकृति का वह सूक्ष्म तत्व इन आंखों से नहीं देखा जा सकता,वह तो केवल तीसरे नेत्र से ही देखा जा सकता है तो सुकरात के पास वह तीसरा नेत्र था। उसने यह जान लिया था कि समाज में सबल-वर्ग जिसे सत्य बतलाकर निर्बल वर्ग के प्रति अन्याय-अत्याचार कर रहा है,वह सच नहीं है, झूठ है। उसके मन में विद्रोह भाव जगा और सुकरात रूढ़ियों पर प्रहार करता रहा। उसके निरंतर प्रहार से एथेन्स का उच्च-वर्ग\ प्रभुवर्ग तिलमिला गया। सुकरात पर आरोप लगाया गया कि वह नवयुवकों को गलत शिक्षा देता है, उनकी बुद्धि को भ्रष्ट करता है, देवनिंदा करता है। वह अधार्मिक है। अदालत ने सुकरात को दोषी ठहराया और मृत्युदंड का आदेश दिया। एथेंस के जिस उच्च-वर्ग ने सुकरात पर आरोप लगाए थे,उसमें कुछ सुकरात के शिष्य भी थे। वे सुकरात के पास आए,कहने लगे कि हम चाहते हैं कि आप जैसे महान ज्ञानी की इस प्रकार मृत्यु न हो,आप आदेश दें तो आपको जेल से भाग जाने का प्रबंध हम लोग कर दें। सुकरात ने कहा कि मैं तो मृत्यु से नहीं डरता,क्योंकि मैं आत्मा के सत्य को जान चुका हूं,मैं अपराधी भी नहीं हूं,जिन लोगों ने ज्ञान के प्रसार को मेरा अपराध बतलाया है,उन पर अज्ञान का प्रकोप है,वे मेरे सत्य से डरे हुए हैं,उनका अंतस अंधकार से घिरा है। सुकरात ने कहा कि यदि मैं ऐसा करूंगा तो अपनी ही नजरों में गिर जाऊंगा। अब आप मेरे लिए जहर का प्याला ले आइए।

डॉ. राजेंद्र रंजन चतुर्वेदी
सेवानिवृत्त प्रोफेसर

प्लेटो ने लिखा है कि जहर पीने से पहले सुकरात ने प्रार्थना की और एक घूंट में पूरा जहर पी गया। थोड़ी देर बाद उसका नीचे का शरीर सुन्न पड़ गया,सुकरात ने अपने शरीर पर ढंकी हुई चादर उठाकर क्रिटे से कहा कि असलेपियस देवी को मुर्गा भेंटकर देना और इसे भूलना नहीं। क्रिटो ने कहा कि ये हो जाएगा और कुछ कहना चाहें तो कहे। सुकरात ने इस पर कोई जवाब नहीं दिया। कुछ देर बाद सुकरात शांत हो गया।

दारा शिकोह की शादी

दारा शिकोह की शादी नादिरा बानू बेगम से हुई थी। वह शाहजहां का लाड़ला बेटा था। इसलिए शादी का जश्न आठ दिनों तक चला था। नादिरा बेगम दारा शिकोह की पहली और अंतिम पत्नी थी। दारा शिकोह के मृत्यु के बाद वह भागकर लाहौर चली गई थी,जहां उसने पति के वियोग में दुखी होकर जहर खा लिया था।

दारा शिकोह की दो उप पत्नियां भी थीं। एक जार्जिया से खरीदी गई ईसाई दासी थी। भारत में आने पर उसका नाम उदयपुरी महल रखा गया था। दारा शिकोह की मौत के बाद वह औरंगजेब के हरम की शोभा बढ़ाने लगी थी। दूसरी उप पत्नी राणा दिल थी। राणा दिल सड़कों पर अपने परिवार के साथ नाच-गाकर पैसे कमाती थी। एक दिन दारा शिकोह ने भी उसके नृत्य संगीत का आनंद उठाया था। उसका दिल राणा दिल पर आ गया। दारा ने उसे फूल देकर अपनी मोहब्बत का इजहार किया था। वह उसे अपने घर लेकर आ गया। राणा दिल बहुत ही सुंदर थी। औरंगजेब भी उसकी सुंदरता का कायल था। दारा शिकोह की मौत के बाद औरंगजेब ने उसे अपने हरम में आकर रहने का न्यौता दिया था। राणा दिल ने उस न्यौते को ठुकरा दिया था।

एस डी ओझा
इंजीनियर, बलिया

नाराज औरंगजेब ने राणा दिल को कारागार में डाल दिया था। वह उसे तरह-तरह के प्रलोभन देकर अपने हरम में बुलाने की कोशिश करने लगा। एक दिन औरंगजेब ने राणा दिल के सुंदर बालों की तारीफ करते हुए एक खत भेजा था। जवाब में राणा दिल ने एक प्लेट में अपने सारे बाल कटवाकर उसे भिजवा दिए। साथ ही खत में लिखा-अब यह कनीज गंजी हो गई है। औरंगजेब ने फिर भी हार नहीं मानी। उसने खत लिखा- "कोई बात नहीं। बाल फिर आ जाएंगे। तुम्हारा चेहरा सलामत रहना चाहिए। मैं तो तुम्हारे सौंदर्य का उपासक हूं।" जवाब में राणा दिल ने एक खून से सना चाकू एक प्लेट में अच्छी तरह से ढंककर भिजवा दिया था। चाकू के साथ एक खत था - "मेरी जिंदगी दारा के बिना अधूरी है। मैं जी रही हूं कि मेरी धड़कनें अभी भी कायम हैं। इसलिए जीना मेरी मजबूरी है। मैंने इस चाकू से अपना चेहरा काटकर उसी तरह से विकृत कर लिया है, जिस तरह से आपने दारा के सिर को तलवार से विकृत कर अपने पिता के पास भिजवाया था। मैं अब आपके किसी मतलब की नहीं रही"। राणा दिल ने कैद में रहते हुए ही एक दिन मौत को गले लगा लिया था।

मानव सभ्यता का इतिहास जितना पुराना है, मुद्रा का भी इतिहास उतना ही पुराना है। मुद्रा का इतिहास मानव जीवन में क्रमशः आए उत्तरोत्तर परिवर्तनों की दिलचस्प कहानी है। आदिम युग से वर्तमान कम्प्यूटर युग तक मनुष्य के जीवन में हुए परिवर्तनों के साथ मुद्रा के रूपों में भी रोचक बदलाव आए हैं। अपनी विकास यात्रा में मुद्रा ने 'पशुधन' एवं 'वस्तु विनिमय प्रणाली' से डिजिटल इकोनॉमिक तक की एक लंबी यात्रा तय की है। रुपये की जितनी अजब करामात है। उतना ही गजब इतिहास भी। प्राचीनकाल में वस्तुओं का मूल्य अनाज और गाय, बैल आदि पशुओं से आंका जाता था। यह व्यवस्था भारत के अलावा ग्रीस में भी प्रचलित थी।

प्राचीन काल से बदलता रहा है मुद्रा का स्वरूप

उस काल में धनिकों के धन की माप पशुओं से की जाती थी। आज जो स्थान सोने-चांदी या रुपयों के नोट का है, प्राचीनकाल में यही स्थान पशुओं का था। वस्तु विनिमय (अदला-बदली) की व्यवस्था अराजक थी,इसमें आए रोज लड़ाई-झगड़े होते थे। अदला-बदली की व्यवस्था की खामियों से निपटने के लिए हजारों साल पहले सिक्कों का प्रचलन शुरू हुआ। प्राचीनकाल में भारत में सोना,चांदी, तांबा,पत्थर,कौड़ी आदि के सिक्के चलन में आए। वैदिक काल में सोने के सिक्के चलते थे,जिन्हें निष्क,शतनाम, सुवर्ण,पाद आदि नामों से जाना जाता था। कालांतर में चांदी के सिक्के प्रचलन में आए। चांदी के सिक्कों को-पण, कार्षापण,विंशतिकी,त्रिंशतिकी आदि नामों से जाना जाता था।

प्रयाग पांडे
वरिष्ठ पत्रकार

प्राचीनकाल में जब सिक्के का आविर्भाव हुआ तब सिक्के के धातु का वजन,मूल्य और शुद्धता उसमें निहित थी,राजा इस बात का वचन देता था। सोने के सिक्के स्वयं सिद्ध मुद्रा थे। स्वयं सिद्ध मुद्रा का मूल्य उसके गर्भ में था। जबकि चांदी के सिक्के अर्ध स्वयं सिद्ध मुद्रा थे। पूर्व मध्यकाल में सोने के सिक्के को 'काशु' कहा जाता था। प्रारंभिक सिक्कों की तौल और बनावट,दोनों निराली थी। ठीक नाप-तौल के प्रमाण स्वरूप चांदी-सोने पर कोई चिह्न बने सिक्कों को मुद्रा कहा जाता था। सिंधु घाटी सभ्यता में भी सिक्कों का प्रचलन था। ईशा पूर्व सातवीं शताब्दी के अंत तक सिक्कों का प्रचलन काफी बढ़ चुका था। भारत में गौतम बुद्ध के कार्यकाल में चांदी के सिक्कों का तौल 40 और 25 रत्ती थी। उस दौर में चांदी के सिक्कों को 'पण' और 'कर्षापण' कहा जाता था। सिक्कों में हाथी,कुत्ता या वृक्षों के ठप्पे अंकित होते थे।

प्राचीनकाल में चांदी और तांबा, सोने से कहीं अधिक मूल्यवान माने जाते थे। चूंकि सोना पृथ्वी के गर्भ में अन्य किसी धातु से अमिश्रित शुद्ध अवस्था में मिलता था। इसलिए सोना सुलभ था। माना जाता है कि संसार में सबसे पहले सिक्कों के लिए सोने को ही प्रयोग में लाया गया था। चूंकि उस दौर में चांदी दुर्लभ थी। चांदी अन्य धातुओं से मिश्रित अवस्था में मिलती थी। चांदी को खानों से निकालना मुश्किल और बेहद श्रमसाध्य था। चांदी को पहले खानों से निकाला जाता था, फिर उसे गलाकर चांदी के पात बनाए जाते थे। इसके बाद टकसालों में चांदी के रुपए ढाले जाते थे। कालांतर में ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में हुई प्रगति से चांदी को खानों से निकालना सरल हो गया तो चांदी सर्वसुलभ हो गई और सोना दुर्लभ हो गया। तब दक्षिण भारत में सोने के सिक्कों की प्रधानता थी। उत्तर भारत में चांदी के सिक्कों का प्रचलन अधिक था।

दिल्ली सल्तनत के दौरान 1329 ई. में चांदी के सिक्कों के स्थान पर कांसे और तांबे के सिक्के चलाए गए। इन्हें सांकेतिक मुद्रा कहा गया। उस दौर में घर-घर टकसाल बन गए। लोग अपने घरों में खुद ही कांसे और तांबे के सिक्के ढालने लगे थे। सल्तनत को आखिरकार इन सिक्कों को बंद करना पड़ा। इनके स्थान पर सोने और चांदी के 'तंके' जारी करने पड़े। इसके बाद फिरोजशाह तुगलक (1351-1388) ने 'शशगानी' नाम का सिक्का चलाया।

ब्रिटिश मुद्रा-प्रणाली से प्रेरित होकर शेरशाह सूरी (1540-1545) ने पुराने घिसे-पिटे सिक्कों के स्थान पर 180 ग्रेन शुद्ध चांदी का रुपया और 380 ग्रेन शुद्ध तांबे का रुपया चलाया। रुपया संस्कृत के शब्द 'रुप्य' या 'रौप्य' का अपभ्रंश है। संस्कृत में चांदी को 'रुप्य' या 'रौप्य' कहते हैं। शेरशाह सूरी के सिक्कों में कूफी के साथ हिंदी में भी लिखा हुआ था। शेरशाह के पुत्र इस्लामशाह के कार्यकाल में सिक्के का पुराना रूप कायम रहा। इस दौर के सिक्कों में भी कूफी के साथ हिंदी में लिखा जाता था,लेकिन मुगल बादशाह बाबर, हुमायूं और अकबर के शासनकाल में चले सिक्कों में बादशाहों ने सिक्कों में सिर्फ कूफी में अपने नाम खुदवाए थे। भारत में हुमायूं ने सबसे पहले फारसी शब्दों का प्रसार किया। इसके बाद अकबर,जहांगीर,औरंगजेब आदि मुगल बादशाहों ने फारसी को खूब बढ़ावा दिया। इस कालखंड में सभी राजकार्य फारसी में ही होते थे। सिक्कों में भी फारसी अक्षरों का उपयोग किया जाता था। सिक्कों से हिंदी शब्द हटा दिए गए थे।

मुगलकाल में बाबर ने 'बाबरी' नाम से चांदी का सिक्का चलाया। अकबर ने 1577 में दिल्ली में एक शाही टकसाल बनवाई और 'मुहर' एवं 'इलाही' नाम से सोने के सिक्के चलाए। अकबर ने 'जलाली' नाम का 175 ग्रेन का चौकोर चांदी का सिक्का और 'दाम' नाम से तांबे का एक सिक्का भी चलाया,जो शेरशाह सूरी द्वारा चलाए गए चांदी के रुपये का 40 वां भाग माना जाता था। अकबर ने अपने कुछ सिक्कों में सीता और राम की मूर्ति अंकित करवाई थी और सिक्कों में देवनागरी में 'राम-सिया' लिखवाया था। जहांगीर ने 'निसार' नाम का एक सिक्का चलाया,जो रुपए के चौथाई मूल्य के बराबर था। टीपू सुल्तान ने 1787 में अपने नाम के सिक्के जारी किए। सिख साम्राज्य के राजा रणजीत सिंह (1792- 1839) ने नानक और गुरु गोविंद सिंह के नाम से सिक्के चलाए। इन सिक्कों में 'नानक सहाय' और 'गोविंद सहाय' उत्कीर्ण कराया था। दिल्ली में ईस्ट इंडिया कंपनी का अधिपत्य कायम हो जाने के बाद मुगलकालीन सिक्कों का प्रचलन बंद कर दिया गया था।

मुर्शिदाबाद के जगत सेठ को नवाब ने टकसाल चलाने के लिए अधिकृत किया था। तब भारत के अधिकांश हिस्से में जगत सेठ का रुपया चलता था। भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन स्थापित हो जाने के बाद कंपनी ने जगत सेठ के मुद्रा चलाने के अधिकार को बदस्तूर कायम रखा।

जिस दौर में ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में आई तब यहां चांदी और सोने के सिक्कों के मान में विविधताएं थीं। बंगाल प्रांत में एक जिले का रुपया दूसरे जिले में नहीं चलता था। अनेक जिलों में विभिन्न मान के रुपए प्रचलन में थे। सोने और चांदी में परस्पर प्रतिस्पर्धा चलती रहती थी। कभी सोना महंगा हो जाता था तो कभी चांदी। फर्रुखाबादी रुपए फर्रुखाबाद बनारस, सागर और कलकत्ता के टकसालों में ढाले जाते थे। मद्रासी रुपए अलग ढलते थे। ईस्ट इंडिया कंपनी की टकसाल कलकत्ता में थी। यहां रुपयों की ढलाई मशीनों से होती थी। इसलिए ईस्ट इंडिया कंपनी की टकसाल में ढले रुपयों को 'कलदार' कहा जाता था।

मुद्रा की इस विभिन्नता से लेन-देन और व्यापार में कठिनाइयां आती थीं। ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा करों की वसूली के लिए नियुक्त कलेक्टरों को कर और भूमि की लगान के रूप में जनता से चांदी के साठ और सोने के बहत्तर सिक्के लेने पड़ते थे। अलग-अलग वस्तुओं के लिए अलग-अलग प्रकार के सिक्के थे।

अट्ठारहवीं सदी के प्रारंभ तक भारत वर्ष का अधिकांश भाग ईस्ट इंडिया कंपनी के आधिपत्य में आ चुका था। इसके तुरंत बाद कंपनी के डायरेक्टरों ने भारत में रुपयों में एकरूपता लाने की कोशिशें शुरू कर दी थी। 1806 में ईस्ट इंडिया कंपनी के डायरेक्टरों ने मद्रास सरकार को पत्र लिखा कि भारत का प्रधान सिक्का चांदी का होना चाहिए जिसका वजन एक तोला हो जिसमें 165 ग्रेन विशुद्ध चांदी हो। डायरेक्टर सोने के सिक्कों का चलन बंद करने के पक्षधर नहीं थे।

1835 में बंगाल के गवर्नर जनरल को ब्रिटिश शासित संपूर्ण भारत का गवर्नर जनरल बना दिया गया था। 27 मई, 1935 को गवर्नर जनरल ने ईस्ट इंडिया कंपनी के आधिपत्य वाले संपूर्ण भारत में एक ही प्रकार के सिक्कों के प्रचलन की घोषणा कर दी। इस संबंध में बाकायदा मुद्रा विधान बना। ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा 1835 में बनाए गए मुद्रा संबंधी विधान भारत की मुद्रा व्यवस्था के इतिहास का एक महत्वपूर्ण पड़ाव था। इस विधान में यह व्यवस्था दी गई कि 1 सितंबर, 1835 से कंपनी के टकसालों में एक ही आकार-प्रकार के सिक्कों की ढलाई होगी। ईस्ट इंडिया कंपनी के टकसालों में ढाले जाने वाले चांदी के सिक्के को फर्रुखाबादी रुपए के बराबर माने जाने का निर्णय लिया गया। चांदी के रुपए का वजन 180 ग्रेन होगा जिसमें 165 ग्रेन विशुद्ध चांदी होगी। अठुन्नी एवं चवन्नियां में भी इसी अनुपात में चांदी होगी। चांदी के सिक्के का मूल्य पन्द्रह रुपए माना गया। यह भी नियम बना कि कुछ विशेष प्रकार के सोने के सिक्के भी ढाले जाएंगे, लेकिन कोई भी व्यक्ति कंपनी शासित क्षेत्र में सोने के सिक्के लेने या देने को बाध्य नहीं होगा। ईस्ट इंडिया कंपनी के इस निर्णय के बाद भारत में हरेक प्रकार के मूल्य का मापदंड चांदी बन गई। हालांकि सोने के सिक्के का चलन जारी रहा।